संस्थापित १८६७ ई.

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

आजीवन शुल्क ₹ २,५००
वार्षिक शुल्क ₹ २००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) एक प्रति ₹ ५.००

● वर्ष : १२८ ● : अंक ५० ● १४ दिसम्बर, २०२३ (गुरुवार) मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष द्वितिया सम्वत् २०८० ● दयानन्दाब्द १६६ वेद व मानव सृष्टि सम्वत्: १६६०८५३१२४

महिला शिक्षा व सशक्तिकरण के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती के हम ऋणी

आर्य समाज कटिया टोला, शाहजहाँपुर के १२७वें वार्षिकोत्सव के समापन समारोह में दिनांक १० दिसम्बर, २०२३ को मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित आर्यजनों को सम्बोधित करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा जी ने कहा कि महर्षि देव दयानन्द की २००वीं जयन्ती के शुभ अवसर पर प्रत्येक आर्य का यह दायित्व है कि वह उनके उद्देश्य "कृण्वन्तो विश्वम् आर्यम्" को पूरा करने के लिए समर्पित भाव से जुट जायें। आज विधर्मियों के हौसले हमारी एकजुटता की कमी के कारण बढ़े हुए हैं। इन्हें रोकने के लिए आर्य समाज को आगे आना होगा। धार्मिक पाखण्ड व रूढ़ियाँ आज शिक्षित समाज में भी पनपनें लगी हैं। लोगों को इसके प्रति जागरूक करने के लिए अभियान चला कर इन्हें दूर करना होगा।

शराब बन्दी सत्याग्रह के जनजागरण के संकल्प के साथ आर्य समाज, कटिया टोला, शाहजहाँपुर उत्सव का समापन

महिला सशक्तीकरण, स्त्री शिक्षा व स्वावलंबन के लिए महर्षि का स्त्री समाज सदैव ऋणी रहेगा। जो उन्नीसवीं सदी में उन्होंने पुरुषों के समान स्त्रियों को शिक्षित करने के लिए लोगों को प्रेरित किया। जिसके परिणाम स्वरूप आज स्त्रियाँ हर क्षेत्र में बढ़-चढ़ कर हिस्सा ले रही हैं। वह चाहे शिक्षा का क्षेत्र हो, रणक्षेत्र हो, विज्ञान का क्षेत्र हो, समाज सेवा का या फिर खेल का। छुआ-छूत का तीव्र विरोध कर उसे दूर करने का प्रयास किया। हर मनुष्य को ईश्वर की प्रजा बताया।

आज शराब के कारण आये दिन सैकड़ों घटनायें देश में हो रही हैं। जिसके कारण बालिकाओं व महिलाओं का बाहर निकलना मुश्किल हो रहा है। दिन- प्रति-दिन अपराधिक घटनायें घट रही हैं, दुर्घटनायें हो रहीं हैं। इसका मूल कारण शराब है। जिसके कारण आम लोगों का जीना मुश्किल हो गया है। एक शराबी के परिवार को समाज भी हेय दृष्टि से देखता है, दिन भर मेहनत मजदूरी करने के बाद सारी कमाई शराब के ठेके पर लुटा कर घर पर भी मार-पीट कर बच्चों व महिलाओं का जीवन दूभर कर देता है एक शराबी।

आर्य समाज के मंच से लगभग पाँच वर्षों से प्रदेश में पूर्ण शराबबन्दी हेतु आन्दोलन चलाया जा रहा है। आगामी ३० जनवरी, २०२४ को पूज्य "बापू जी" के बलिदान दिवस के अवसर पर दिल्ली के जन्तर-मन्तर पर देश में पूर्ण शराब बन्दी के लिए सत्याग्रह किया जायेगा। प्रत्येक आर्य से निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में पहुँच कर इस सत्याग्रह में शामिल होकर इसे सफल बनायें।

समारोह में आर्य प्रतिनिधि सभा की वरिष्ठ उपप्रधान गायत्री दीक्षित, कमलेश गुप्ता, चंद्रकांता सिंह, सत्यभामा सिंह, डॉ. सुनीता जैसल, हर प्रसाद पांडे, डॉ. अमितेश अमित, अवनीश दीक्षित, राजेश शुक्ला, सत्य प्रकाश तिवारी, ज्ञानेश चंद्र मिश्रा, श्रीनिवास मिश्र, रामनरेश बाजपेई, राजेंद्र मिश्रा, संतोष कुमार दीक्षित, अरविंद मिश्रा, रामऔतार त्रिपाठी, डॉ. आशीष गोयल, डॉ. रानू दुबे, एम.पी.एस चौहान, राजेश कुमार, डॉ. मृदुल शुक्ला, डॉ. उपासना श्रीवास्तव, शची अग्रवाल, डॉ. चंद्र रेखा, रंजीता, अनीता वाजपेई, सुमन मिश्रा, संध्यानंद, प्रीति अग्रवाल, राधा रमन मिश्रा, धर्मपाल, नरेंद्र सक्सेना, ऋषभ शुक्ला, रंजीता अवस्थी, संचिता श्रीवास्तव, मनीष मिश्रा, विनोद कुमार, संजय मौर्य, राकेश वर्मा, नीरज कश्यप, करोड़ी लाल, पवन शर्मा, सुधीर, पप्पू आदि उपस्थित रहे।

-देवेन्द्रपाल वर्मा

वेदामृतम्

य उदाजन् पितरो गोमयं वसु, ऋतेनाभिन्दन् परिवत्सरे वलम्।
दीर्घायुत्वमङ्गिरसो वो अस्तु, प्रतिगृभ्णीत मानवं सुमेधसः।।

ऋग् १०.६२.२

हमारे राष्ट्र की गोएँ हरी गई हैं, उन्हें बलासुर ने ले-जाकर अपनी गुफा में छिपा लिया है। गौएँ वेद में सम्पत्ति और प्रकाश की प्रतीक हैं। जो राष्ट्र पहले समृद्ध, विद्या के प्रकाश से परिपूर्ण, चतुर्मुखी उन्नति से सम्पन्न तथा सब देशों का शिरोमणि था, वहीं अब श्री-विहीन और दुर्गतिग्रस्त हो गया है। ऐसे विकट समय में अंगिरस ऋषि सामने आते हैं। 'अंगिरस' वे हैं, जिन्होंने अंगारों पर तप किया है, जिन्होंने परार्थ होम करने के लिए यत्नपूर्वक अपने अंग-रस को संचित किया है, जिनमें बलिदान की भावना कूट-कूटकर भरी है, जो देश को पुनः पूर्ववत् गौरव के शिखर पर आसीन करने के स्वप्न अपने मन में संजोये हुए हैं। सूर्य-किरण-रूप गौएँ भी मेघरूप-वलासुर के कारागार से अन्ततः मुक्त होती ही हैं, इसी प्रकार सैकड़ों बलासुरों के द्वारा अपने अधिकार में की हुई हमारे राष्ट्र की नैतिक और भौतिक श्री की गौएँ भी मुक्त होकर रहेंगी। हमारे तत्त्वदर्शी वीर अंगिरस ऋषियों ने अपहर्ताओं के कारागार को छिन्न-भिन्न कर राष्ट्र की गौओं का उद्धार करने का संकल्प ले लिया है, और ये पूर्णतः संघर्ष के लिए कटिबद्ध हो गये हैं। तन, मन, धन, वाणी, सब-कुछ इन्होंने इसके लिए अपित करें दिया है। देखो, काले बादल छटने लगे है, बलासुर की गुफा टूट रही है, गौएँ रंभाती हुई बाहर निकल रही हैं। पूरे वर्ष-भर के भीषण संग्राम के पश्चात् यह फल सामने आ रहा है। हे सुमेधा अंगिरस ऋषियो ! हे पालनकर्ताओ ! हम तुम्हारे कृतज्ञ हैं। भगवान् तुम्हें दीर्घायुष्य प्रदान करे, तुम जुग जुग जियो और हम मानवों को सदा अपना आश्रय देते रहो। गौओं से परिपूर्ण हुआ यह सुखी राष्ट्र तुम्हारा स्वागत कर रहा है, इसे स्वीकार करो।

यज्ञ-अध्यात्म-प्रेरक!

-रिपु दमन आर्य

जैसे भौतिक अग्नि में हव्य की आहुति देकर अग्निहोत्र होता है, वैसे अध्यात्मिक जगत में भी अग्निहोत्र होता है। परमात्मा रुपी अग्नि में जीवात्मा, प्राण, मन,बुद्धि एवं इन्द्रियों को समर्पित करना आध्यात्मिक अग्निहोत्र कहलाता है। भौतिक अग्निहोत्र के साथ-साथ अग्निहोत्री को यह आध्यात्मिक अग्निहोत्र भी करना होता है, तभी उसका अग्निहोत्र पूर्ण माना जाता है। इसलिए यज्ञकर्तृता निम्न मन्त्र का पाठ कर यज्ञ का प्रारम्भ करता है

"ओ३म् उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते संसृजेथामयं च।"

हें परमात्माग्निम तू उद्बुद्ध होकर मेरे हृदय में जाग जिससे तू और मेरा आत्मा मिलकर दोनों "इष्ट" और "पुष्ट" का सर्जन करे। इन "इष्ट" और "पुष्ट" रूपी महान कार्यों को वही व्यक्ति पूर्ण कर सकता है जिसने भौतिक अग्नि को प्रज्वलित करने के पश्चात परमात्मा रुपी दिव्य अग्नि को अपने हृदय रुपी यज्ञकुण्ड में स्थापित कर लिया है। बाहर की अग्नि को हम समिधा और धृत से प्रदीप्त करते हैं और शारीरिक अग्नि को अस्थिरुपी समिधा व वीर्य रूपी धृत से प्रदीप्त करते हैं। परमात्माग्नि में समर्पित हमारे तेज को वह अपने महान् तेज से सूक्ष्म और तेजस्वी बनाकर अधिक विस्तृत कर देता है और हमारी स्वार्थ भावना परार्थ में बदल जाती है। व्यक्तिगत कामनाओं का अन्त हो जाता है। "मै" व मेरा परिवार न रहकर समस्त विश्व अपना परिवार बन जाता है। अग्न्याधान मन में यज्ञमान ईश्वर से कहता है - "धौः इव वरिम्णा" अर्थात् मै द्युलोक एवं पृथ्वी की तरह विस्तृत हो जाऊँ। कितना सुन्दर है यह यज्ञ का आध्यात्मिक स्वरूप।

देवेन्द्रपाल वर्मा
प्रधान/संरक्षक

पंकज जायसवाल
मंत्री/सम्पादक

आर्य शिवशंकर वैश्य
प्रबन्ध सम्पादक

सम्पादकीय.....

''ईश्वर की शर्तें''

संसार में अनेक बीमा कंपनियां काम करती हैं। वे लोगों के माल सामान के नुकसान की क्षतिपूर्ति करती हैं। कुछ धनराशि के रूप में, मासिक या वार्षिक किस्त भी लेती हैं। ''यदि किसी को कुछ हानि हो जाए, तो उसकी क्षतिपूर्ति भी कर देती हैं। परंतु ये सब कंपनियां जो बीमा करती हैं, और क्षतिपूर्ति करती हैं, वह शर्तों के आधीन होती है।''

इन कंपनियों के समान, ईश्वर भी एक बहुत बड़ी बीमा कंपनी है। ''बल्कि ऐसा कहना चाहिए कि वह संसार की सबसे बड़ी बीमा कंपनी है।'' विशेष बात यह है कि, ''ईश्वर, बीमा की कोई किस्त भी धनराशि के रूप में नहीं लेता, बिल्कुल मुफ्त में बीमा करता है। यही उसकी दयालुता और बड़प्पन है। वह भी आपके नुकसान की क्षतिपूर्ति करता है। परन्तु शर्तें वहां भी लागू होती हैं।''

जैसे बीमा कंपनी कहती है, ''हम आपके माल गोदाम का बीमा कर रहे हैं। परंतु इन शर्तों पर।'' वे शर्तें ये हैं, कि ''आपके गोदाम की बिल्डिंग मजबूत होनी चाहिए। उसमें बिजली की वायरिंग पक्की होनी चाहिए, कच्ची वायरिंग नहीं होनी चाहिए। दरवाजे भी मजबूत हों। मजबूत ताले भी ठीक प्रकार से लगाए जाएं। पूरी सुरक्षा की जाए, तभी हम आपके नुकसान की पूर्ति करेंगे।'' इन शर्तों पर बीमा कंपनी आपके माल गोदाम का बीमा करती है।

ठीक इसी प्रकार से ईश्वर भी बीमा करता है। उसकी भी शर्तें हैं। ईश्वर की शर्तें ये हैं, कि ''आप अपना काम पूरी ईमानदारी बुद्धिमत्ता दूरदर्शिता तथा मेहनत से करें। चारों ओर से सावधान रहें। 'कब कहां से कौन आक्रमण कर सकता है', इस बात की पूरी जानकारी करें। उस आक्रमण से अपनी सुरक्षा के पूरे प्रबंध करें। आलसी बन कर न बैठे रहें। जितना आपका सामर्थ्य है, पूरा लगाएं। उसके बाद भी यदि कोई दुष्ट बलवान व्यक्ति आपको नुकसान कर जाएगा, तो मैं आपके नुकसान की पूर्ति कर दूंगा।''

''न्याय के दो पक्ष होते हैं। एक--दुष्ट व्यक्ति को दंडित करना। और दूसरा -- अन्यायग्रस्त व्यक्ति की क्षतिपूर्ति करना। दोनों को मिलाकर पूर्ण न्याय कहलाता है।'' ''यदि चोर को दंडित तो किया जाए, परंतु सेठ का जो सामान चोरी हुआ, उस सेठ को वह सामान वापस न दिलाया जाए, तो यह अधूरा न्याय कहलाता है।'' इसलिए पूर्ण न्याय तभी कहलाएगा, ''जब न्यायाधीश, सेठ के चोरी हुए समान को सेठ को वापस दिलाए।'' ''इसी प्रकार से ईश्वर भी पूर्ण न्यायकारी तभी कहलाएगा, जब वह दुष्ट लोगों को दंडित करे और अन्यायग्रस्त व्यक्ति के नुकसान की क्षतिपूर्ति करे.''

''क्योंकि ईश्वर पूर्ण न्यायकारी है। अतः वह दुष्ट लोगों को अगले जन्मों में पशु पक्षी कीड़ा मकोड़ा वृक्ष वनस्पति सांप बिच्छू आदि योनियों में दंड देता है। और उन दुष्ट लोगों के अत्याचार से, जिन निर्बल लोगों की जो भी हानियां हुई, उनकी पूर्ति, ईश्वर उनको अगले जन्म में कर देता है।''

ईश्वर कैसे क्षतिपूर्ति करता है? ''किसी को धनवान के घर में जन्म दे देता है। किसी को विद्वान के घर जन्म देता है। और जो जो क्षतिपूर्ति करने के उसके तरीके हैं, उन तरीकों से उनकी क्षतिपूर्ति कर देता है।'' ''उसकी कर्म फल व्यवस्था को हम पूरी तरह से नहीं समझ सकते। लेकिन इतनी तो गारंटी है, कि यदि वह क्षतिपूर्ति न करे, तो वह पूर्ण न्यायकारी नहीं कहलाएगा। जबकि वेदों में ईश्वर को पूर्ण न्यायकारी बताया है।अतः ईश्वर निश्चित रूप से क्षतिपूर्ति करेगा ही।''

''अतः पूरी सावधानी से अपना जीवन जीएं। अपनी सुरक्षा के लिए पूर्ण पुरुषार्थ करें, और सदा शुभ कर्म ही करें। फिर भी कोई बलवान अत्याचारी यदि आप की हानि कर देगा, तो फिर चिंता भी न करें। तब ईश्वर आपके नुकसान की पूर्ति अवश्य ही कर देगा।'' ''हमारे कहने का अभिप्राय यह है कि, आप लापरवाही भी न करें, और अनावश्यक रूप से तनाव ग्रस्त जीवन भी न जीएं।''

-सम्पादक

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ द्वारा पंजीकृत समस्त आर्य समाजों को निर्देशित किया जाता है। सभा द्वारा जारी विवाह प्रमाण पत्रों में जारी किये गये प्रमाण पत्रों की ''सभा प्रति'' सभा कार्यालय में अतिशीघ्र जमा करा दें।

-कार्यालय अधीक्षक
आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र., लखनऊ

गतांक से आगे.....

सत्यार्थ प्रकाश

अथ त्रयोदश समुल्लास

अथ कृश्चीनमत विषयं व्याख्यास्यामः

जबूर का दूसरा भाग

काल के समाचार की पहली पुस्तक

योहन रचित सुसमाचार

१२१-और मैंने दृष्टि की और देखो मेम्ना सियोन पर्वत पर खड़ा है और उसके संग एक लाख चवालीस सहस्र जन थे जिनके माथे पर उसका नाम और उसके पिता का नाम लिखा है। -यो० प्र० प० १४। आ० १।।

(समीक्षक) अब देखिये ! जहां ईसा का बाप रहता था वहीं उसी सियोन पहाड़ पर उसका लड़का भी रहता था। परन्तु एक लाख चवालीस सहस्र मनुष्यों की गणना क्योंकर की ? एक लाख चवालीस सहस्र ही स्वर्ग के वासी हुए। शेष करोड़ों ईसाइयों के शिर पर न मोहर लगी? क्या ये सब नरक में गये ? ईसाइयों को चाहिये कि सियोन पर्वत पर जाके देखें कि ईसा का उक्त बाप और उनकी सेना वहां है वा नहीं? जो हों तो यह लेख ठीक है; नहीं तो मिथ्या। यदि कहीं से वहां आया है तो कहां से आया? जो कहो स्वर्ग से; तो क्या वे पक्षी हैं कि इतनी बड़ी सेना और आप ऊपर नीचे उड़ कर आया जाया करें ? यदि वह आया जाया करता है तो एक जिले के न्यायाधीश के समान हुआ। और बह एक दो या तीन हो तो नहीं बन सकेगा किन्तु न्यून एक-एक भूगोल में एक-एक ईश्वर चाहिए। क्योंकि एक दो तीन अनेक ब्रह्माण्डों का न्याय करने और सर्वत्र युगपत् घूमने में समर्थ कभी नहीं हो सकते।। १२१।।

१२२-आत्मा कहता है हां कि वे अपने परिश्रम से विश्राम करेंगे परन्तु उनके कार्य उनके संग हो लेते हैं। -यो० प्र० प० १४। आ० १३।।

(समीक्षक) देखिये ! ईसाइयों का ईश्वर तो कहता है उनके कर्म उन के संग रहेंगे अर्थात् कर्मानुसार फल सब को दिये जायेंगे और ये लोग कहते हैं कि ईसा पापों को ले लेगा और क्षमा भी किये जायेंगे। यहां बुद्धिमान् विचारें कि ईश्वर का वचन सच्चा वा ईसाइयों का ? एक बात में दोनों तो सच्चे हो हो नहीं सकते। इनमें से एक झूठा अवश्य होगा। हम को क्या। चाहे ईसाइयों का ईश्वर झूठा हो वा ईसाई लोग।।१२२।।

१२३-और उसे ईश्वर के कोप के बड़े रस के कुण्ड में डाला। और रस के कुण्ड का रौंदन नगर के बाहर किया गया और रस के कुण्ड में से घोड़ों के लगाम तक लोहू एक सौ कोश तक बह निकला।।

-यो० प्र० प० १४७ आ० १९१२०।।

(समीक्षक) अब देखिये। इनके गपोड़े पुराणों से भी बढ़कर है वा नहीं ? ईसाइयों का ईश्वर कोप करते समय बहुत दुःखित हो जाता होगा और उसके कोप के कुण्ड भरे हैं क्या उसका कोप जल है? वा अन्य द्रवित पदार्थ है कि जिससे कुण्ड भरे हैं? और सौ कोश तक रुधिर का बहना असम्भव है क्योंकि रुधिर वायु लगने से झट जम जाता है पुनः क्यों कर बह सकता है? इसलिये ऐसी बातें मिथ्या होती हैं।।१२३।।

१२४-और देखो स्वर्ग में साक्षी के तम्बू का मन्दिर खोला गया। -यो० प्र० प० १५। आ० ५।।

(समीक्षक) जो ईसाइयों का ईश्वर सर्वज्ञ होता तो साक्षियों का क्या काम ? क्योंकि वह स्वयं सब कुछ जानता होता। इससे सर्वथा यही निश्चय होता है कि इनका ईश्वर सर्वज्ञ नहीं किन्तु मनुष्यवत् अल्पज्ञ है। वह ईश्वरता का क्या काम कर सकता है? नहिं नहिं नहिं, और इसी प्रकरण में दूतों की बड़ी-बड़ी असम्भव बातें लिखी हैं उनको सत्य कोई नहीं मान सकता। कहां तक लिखे इस प्रकरण में सर्वथा ऐसी ही बातें भरी हैं।। १२४।।

१२५- और ईश्वर ने उसके कुकर्मों को स्मरण किया है। जैसा उसने तुम्हें दिया है तैसा उसको भर देओ और उसके कर्मों के अनुसार दूना उसे दे देओ। -यो० प्र० प० १८। आ० ५। ६।।

(सभीक्षक) देखो ! प्रत्यक्ष ईसाइयों का ईश्वर अन्यायकारी है। क्योंकि न्याय उसी को कहते हैं कि जिसने जैसा वा जितना कर्म किया उसको वैसा और उतना ही फल देना। उससे अधिक न्यून देना अन्याय है। जो अन्यायकारी की उपासना करते हैं वे अन्यायकारी क्यों न हों।।१२५।।

१२६-क्योंकि मेम्ने का विवाह आ पहुंचा है और उसकी स्त्री ने अपने को तैयार किया है। -यो० प्र० प० १९। आ० ७।।

(समीक्षक) अब सुनिये ! ईसाइयों के स्वर्ग में विवाह भी होते हैं। क्योंकि ईसा का विवाह ईश्वर ने वहीं किया। पूछना चाहिये कि उसके श्वसुर, सासू, शालादि कौन थे और लड़के बाले कितने हुए? और वीर्य के नाश होने से बल, बुद्धि. पराक्रम आयु आदि के भी न्यून होने से अब तक ईसा ने वहां शरीर त्याग किया होगा क्योंकि संयोगजन्य पदार्थ को वियोग अवश्य होता है। अब तक ईसाइयों ने उसके विश्वास में धोखा खाया और न जाने कब तक धोखे में रहेंगे।।१२६।।

१२७-और उसने अजगर को अर्थात् प्राचीन सांप को जो दियाबल और शैतान है पकड़ के उसे सहस्त्र वर्ष लों बांध रक्खा।। और उसका अथाह कुण्ड में डाला और बन्द करके उसे छाप दी जिसतें वह जब लों सहस्त्र वर्ष पूरे न हो तब लों फिर देशों के लोगों को न भरमावे।। -यो० प्र० प० २०आ० २।३।।

(समीक्षक) देखो ! मरू मरूं करके शैतान को पकड़ा और सहस्त्र वर्ष तक बन्ध किया, फिर भी छूटेगा। क्या फिर न भरमावेगा ? ऐसे दुष्ट को तो बन्दीगृह में ही रखना वा मारे विना छोड़ना ही नहीं। परन्तु यह शैतान का होना ईसाइयों का भ्रममात्र है वास्तव में कुछ भी नहीं। केवल लोगों को डरा के अपने जाल में लाने का उपाय रचा है। जैसे किसी धूर्त ने किन्हीं भोले मनुष्य से कहा कि चलो ! तुमको देवता का दर्शन कराऊं। किसी एकान्त देश में ले जाके एक मनुष्य को चतुर्भुज बना कर रक्खा। झाड़ी में खड़ा करके कहा कि आख मीच लो। जब मैं कहूं तब खोलना और फिर जब कहूँ तभी मीच लो जो न मीचेगा वह अन्धा हो जायेगा। वैसी इन मत वालों की बातें हैं कि जो हमारा मजहब न मानेगा वह शैतान का बहकाया हुआ है। जब वह सामने आया तब कहा देखो ! और पुनः शीघ्र कहा कि मीच लो। जब फिर झाड़ी में छिप गया तब कहा खोलो! देखा नारायण को. सब ने दर्शन किया ! वैसी लीला मजहबियों की है। इसलिये इनकी माया में किसी को न फंसना

क्रमशः अगले अंक में...

दयानन्द शास्त्रार्थ प्रश्नोत्तर-संग्रह

''परमात्मा विषय''

(श्री मान् राजा गोविर्दासह जी बहादुर बनेड़ा नरेश के प्रश्नों का उत्तर-अक्टूबर, सन् १८८१)

प्रश्न-जीव, आत्मा और परमात्मा क्या है और उनमें क्या भेद है ?

उत्तर-जीव और आत्मा को तो हम एक ही मानते हैं और परमात्मा परमेश्वर उससे न्यारा है। हमने गीता के दो श्लोक पढ़े-द्वाविमौ पुरुषौ लोके क्षरश्चाक्षर एव च। क्षरः सर्वाणि भूतानि कूटस्थोऽक्षर उच्यते ।। उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः परमात्मेत्युदाहृतः । यो लोकत्रयमाविश्य बिभर्त्यव्यय ईश्वरः ।।

स्वामी जी ने कहा गीता प्रामाणिक ग्रन्थ नहीं है। हम गीता को प्रामाणिक नहीं मानते ।

(लेखराम पृ० ५५०)

आर्यसमाज की ईश्वरीय ज्ञान वेदों के सम्बन्ध में कुछ प्रमुख मान्यतायें

-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

हमारा यह संसार किससे बना और कौन इसे संचालित कर रहा है, इसका उत्तर खोजते हुए हम इसके कर्ता व पालक ईश्वर तक पहुंचते हैं। सौभाग्य से हमें सृष्टि के आदि में उत्पन्न व प्रचारित चार वेद आज भी अपने मूल स्वरूप तथा शुद्ध अर्थों सहित प्राप्त व विदित हैं। इन वेदों का अध्ययन कर ऋषि दयानन्द और अनेक अन्य विद्वानों ने वेदों के संबंध में अपने निष्कर्ष निकाले हैं। सारा संसार वेदों को विश्व का सबसे प्राचीन ग्रन्थ स्वीकार करता है। ऋषि दयानन्द वेदों के मर्मज्ञ थे। उन्होंने भी वेदों पर गहन खोज की तो पाया कि वेद सृष्टि के आरम्भ में अमैथुनी सृष्टि में उत्पन्न मनुष्यों को ईश्वर से प्राप्त ज्ञान के ग्रन्थ हैं। सृष्टि को परमात्मा ही बनाता है। सृष्टि को बनाने वाली सत्ता परमात्मा व उस परमात्मा के अतिरिक्त अन्य कोई सत्ता दृश्यमान जड़ व चेतन जगत का रचयिता नहीं है। यदि परमात्मा से इतर कोई सत्ता होती तो उसका प्रत्यक्ष या अनुमान अवश्य होता। परमात्मा का प्रत्यक्ष व अनुमान दोनों होता है। ऋषि दयानन्द के ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश को पढ़ व समझ कर इसकी पुष्टि होती है कि हमारा यह संसार वा ब्रह्माण्ड एक सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, अनादि, नित्य सत्ता व शक्ति परमात्मा से ही बना है व संचालित हो रहा है।

वेद सृष्टि को परमात्मा से उत्पन्न बताते हैं। हमारे ऋषियों ने अपने वेदज्ञान के आधार पर सृष्टि की उत्पत्ति से जुड़ी सभी शंकाओं का भी समाधान किया है। उनके अनुसार संसार में कुल तीन अनादि पदार्थ हैं। इनके नाम हैं ईश्वर, जीव और प्रकृति। यह तीनों अनादि तथा नित्य सत्तायें हैं। इनकी कभी किसी निमित्त या उपादान कारण से उत्पत्ति नहीं हुई है। अभाव से भाव की उत्पत्ति नहीं हुआ करती। यदि यह कभी उत्पन्न हुए होते तो इनके पूर्व किसी व किन्हीं अन्य अनादि पदार्थों को मानना पड़ता। वास्तविकता यही है कि अनादि काल से ही यह तीन पदार्थ विद्यमान हैं। इन्हीं से सृष्टि की रचना व पालन होता है। ईश्वर एक सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक सत्ता है। जीव एक चेतन सत्ता है जो अणु परिमाण वाली है। यह अत्यन्त सूक्ष्म है। विचार व चिन्तन करने सहित वेद व दर्शन के प्रमाणों के अनुसार इस जीवात्मा का ईश्वर से व्याप्य होना ज्ञात होता है। संसार में अनादि, नित्य, अमर व अविनाशी जीवों की संख्या अनन्त है। इनकी गणना नहीं की जा सकती परन्तु ईश्वर के ज्ञान में यह गण्य हैं। ईश्वर को प्रत्येक जीवात्मा का ज्ञान है तथा इसके अतिरिक्त वह सभी जीवों के अतीत के पूरे इतिहास व कर्मों सहित उनकी जन्म व मृत्यु आदि का भी पूरा-पूरा यथार्थ ज्ञान रखते हैं।

हम जिस सृष्टि को देखते हैं इसके सभी पदार्थ प्रकृतिरूपी उपादान कारण में परमात्मा द्वारा विकार उत्पन्न कर बनाये गये हैं। सृष्टि उत्पत्ति के आरम्भ में प्रकृति से महत्तत्व बुद्धि, इससे अहंकार, पांच तन्मात्रायें, दश इन्द्रिया, मन, पृथिव्यादि पांच भूत आदि बनते हैं। यह विकार व सृष्टि परमात्मा द्वारा अपनी सर्वज्ञता व सर्वशक्तिमतता से की जाती है। सृष्टि के बनने के बाद वनस्पति जगत और इसके बाद प्राणी जगत की सृष्टि होती है। सृष्टि की रचना के क्रम में अन्तिम उत्पत्ति मनुष्यों की होती है। परमात्मा मनुष्यों व अन्य सभी प्राणियों को अमैथुनी सृष्टि में उत्पन्न करते हैं। अमैथुनी सृष्टि में उत्पन्न मनुष्यों को अपने जीवन को चलाने के लिये भाषा व ज्ञान की आवश्यकता होती है। इसकी पूर्ति व प्राप्ति भी परमात्मा द्वारा ही कराई जाती है। परमात्मा इन उत्पन्न मनुष्यों में से चार श्रेष्ठ ऋषि आत्माओं अग्नि, वायु, आदित्य तथा अंगिरा को क्रमशः ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद का ज्ञान उनकी आत्मा में अपने जीवस्थ स्वरूप से प्रेरणा देकर कराते हैं। यह चार ऋषि ब्रह्मा जी नाम के ऋषि को वेदों का ज्ञान देते हैं और इन्हीं से माता, पिता व आचार्य की भांति सृष्टि के शेष स्त्री व पुरुषों को वेदों का ज्ञान कराया जाता है जिससे सभी आदि मानव व उनकी सन्ततियां वेदज्ञान से युक्त होकर पंच-महायज्ञों व अपने जीवन के अन्य सभी कर्तव्यों का पालन करते हैं जैसा कि हमें वेद व ऋषियों के उपनिषद, दर्शन तथा मनुस्मृति आदि ग्रन्थों में पढ़ने को मिलता है।

सृष्टि की आदि में परमात्मा से उत्पन्न यह वेदज्ञान ही पांच हजार वर्ष पूर्व हुए महाभारत युद्ध के समय तक अपने शुद्धस्वरूप में विद्यमान था। हमारे सभी ऋषि-मुनि समाज में वेदों का प्रचार करते थे। वेदों से इतर किसी मनुष्य व आचार्य द्वारा वर्तमान की तरह का कोई मत व सम्प्रदाय नहीं था। महाभारत युद्ध के बाद देश में ज्ञान व विज्ञान का पतन हुआ। वेदों का अध्ययन व अध्यापन न होने से समाज में अविद्या उत्पन्न हुई जिसका परिणाम देश व समाज में अन्धविश्वासों तथा कुरीतियों का उत्पन्न होना हुआ। यह अज्ञान व पतन उत्तरोतर बढ़ता ही गया। देश विदेशी आक्रान्ताओं का दास बन गया। अंग्रेजों की दासता के समय 12 फरवरी, सन् 1825 को ऋषि दयानन्द जी का जन्म हुआ था। उन्होंने ईश्वर की प्रेरणा से बोध को प्राप्त होकर धर्म के वास्तविक रूप की खोज की जिसमें वह सफल हुए। उन्हें अपने विद्यागुरु प्रज्ञाचक्षु दण्डी स्वामी विरजानन्द सरस्वती जी से वेदांगों का अध्ययन कर वेदों के सत्यस्वरूप का ज्ञान प्राप्त हुआ। स्वामी दयानन्द ने अपने गुरु की प्रेरणा तथा अपनी भावनाओं के अनुरूप देश देशान्तर में वेदों के सत्यस्वरूप का प्रचार किया। वेद का सत्यस्वरूप अज्ञान, अन्धविश्वास, पाखण्डों तथा मिथ्या कुरीतियों व परम्पराओं से सर्वथा मुक्त है। अन्धविश्वासों व कुरीतियों से मनुष्य को अन्यान्य हानियां होती हैं। अतः मनुष्यों में ज्ञान व विज्ञान की उन्नति तथा उनके समस्त दुःखों का निवारण करने के लिये ऋषि दयानन्द ने वेदों का प्रचार करते हुए अज्ञान से युक्त अन्धविश्वासों, पाखण्डों तथा कुरीतियों का खण्डन किया। सबको वेदाध्ययन करने का अधिकार दिया व प्रेरणा की। उनके समय में स्त्री व शूद्रों को वेदों का अध्ययन व मन्त्रों का उच्चारण करने का अधिकार नहीं था। ऋषि दयानन्द ने सबको वेदाध्ययन व वेद मन्त्रों का पाठ करते हुए सन्ध्या व यज्ञ करने का अधिकार भी दिया है जिससे मनुष्य की आत्मिक उन्नति होकर उसे धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष प्राप्त होते हैं। मनुष्य जीवन में यही चार पदार्थ धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष प्राप्तव्य होते हैं। यदि इन्हें प्राप्त नहीं किया तो हमारा मनुष्य जीवन असफल वा अधूरा रहता है।

वेद विषयक ऋषि दयानन्द की तर्क एवं युक्ति सहित ज्ञान व विज्ञान से पूर्ण प्रामाणिक मान्यता है कि चार वेद संहितायें सृष्टि की आदि में ईश्वर से चार ऋषियों को प्राप्त सब सत्य विद्याओं का ज्ञान हैं जिससे मनुष्य मात्र का पूर्ण कल्याण व हित होता है। वेदों का अध्ययन करना तथा उसी के अनुसार जीवन व्यतीत करना सभी मनुष्यों का परम धर्म व परम कर्तव्य है। सभी मनुष्यों को वेदों के सत्यस्वरूप को जानकर वेदों को दूसरों को पढ़ाना तथा सुनाना भी चाहिये। अपने से बड़े विद्वानों से वेदों के सत्य अर्थों को सुनना भी चाहिये। वेदों के प्रचार के लिये ही ऋषि दयानन्द ने 10 अप्रैल, सन् 1875 को मुम्बई में आर्यसमाज नामी संगठन की स्थापना की थी। आर्यसमाज के दस नियम हैं। यह सभी नियम वेद की सत्य मान्यताओं का प्रचार करने तथा देश व समाज को दुःखों से दूर कर सुखी बनाने के लिये ही बनाये गये हैं। इस लक्ष्य की प्राप्ति भी आर्यसमाज के नियमों के पालन से होती है। वेदों के आधार पर आर्यसमाज सब मनुष्यों के लिये पंच-महायज्ञ करने का विधान, समर्थन और प्रचार करता है। आर्यसमाज के सभी सदस्य व अनुयायी भी पंचमहायज्ञों को नित्यप्रति करते हैं। इन यज्ञों को करने से मनुष्यों की सर्वांगीण उन्नति होती है।

वेदों के प्रचार से समाज से अविद्या का निवारण व नाश होता है। हम जितना वेदों से दूर होते हैं उतना ही अविद्या से ग्रस्त होते जाते हैं। अतः वेदों का प्रतिदिन स्वाध्याय तथा वेदों पर वैदिक विद्वानों के विचार सुनने हेतु आर्यसमाज में जाना लाभप्रद होता है। आजकल नैट आदि पर भी अनेक विद्वानों के व्याख्यान तथा भजन आदि सुलभ होते हैं। यह भी मनुष्य की नास्तिकता को दूर कर उसे आध्यात्मिक जीवन का मार्ग बताते हैं। इनका भी लाभ उठाया जा सकता। वेदों से लाभ प्राप्त करने का प्रमुख उपाय है कि हम प्रतिदिन एक से दो घण्टा सत्यार्थ प्रकाश व ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका का अध्ययन करें और इसको पूरा करने के बाद ऋषि दयानन्द और आर्य विद्वानों के वेदभाष्य का भी अध्ययन, स्वाध्याय, चिन्तन व मनन करें। ऐसा करके हमारी अविद्या दूर होने के साथ हमारे आचरण व व्यवहार में भी गुणात्मक परिवर्तन आयेगा और हम स्वस्थ व सुखी होने सहित धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को प्राप्त होकर अपने जीवन को सफल कर सकते हैं। आर्यसमाज की वेदों के सम्बन्ध में प्रमुख मान्यता यही है कि वेद ईश्वर प्रदत्त ज्ञान होने से सर्वथा सत्य व मनुष्यों के सुख के प्रमुख साधन हैं। वेद सम्पूर्ण ज्ञान हैं। वेद स्वतः प्रमाण हैं तथा अन्य ग्रन्थ वेदानुकूल होने पर ही परतः प्रमाण की कोटि में आते हैं। वेदों के ज्ञान व आचरण से ही मनुष्य का जीवन सफल हो सकता है तथा जन्म व परजन्म में उन्नति हो सकती है। अतः हमें मत-मतान्तरों के साम्प्रदायिक ग्रन्थों को छोड़ कर वेद व ऋषियों के ग्रन्थों का अध्ययन कर वैदिक जीवन अपनाकर अपने जीवन के लक्ष्य धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को प्राप्त होना चाहिये। ओ३म् शम्। ●●●

पुनर्जन्मवाद

-स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती

आजकल सर्वसाधारण में आर्यसमाज के कारण धर्म की चर्चा फिर होने लगी है। धर्मसम्बन्धी सिद्धान्तों के विवेचन की उत्कण्ठा दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ रही है। जहाँ दो-चार शिक्षित मनुष्य बैठते हैं वहाँ कुछ-न-कुछ धर्म-चर्चा अवश्य होती है, परन्तु वर्तमान समय में पुनर्जन्म के सिद्धान्त पर बहुत-से मनुष्यों को वाद-विवाद करते पाकर तथा ईसाई एवं मुसलमानों को बहुत ही तुच्छ युक्तियों से इस सिद्धान का खण्डन करते देखकर मुझे आवश्यकता प्रतीत हुई कि मैं भी इस विषय पर एक छोटा-सा लेख लिखूँ। यद्यपि पण्डित लेखरामजी ने इस विषय पर एक भारी पुस्तक लिखी है, परन्तु अधिक मूल्य होने के कारण सर्वसाधारण में उसका प्रचार बहुत ही थोड़ा हो सकता है। इसी विचार को अपने सन्मुख रखते हुए मैंने इस विषय पर लिखना उचित समझा। आशा है कि मेरा श्रम व्यर्थ नहीं जाएगा, क्योंकि जनता ने मेरे पिछले लेखों का आशातीत आदर किया है।

जितने मत कर्मों का फल मानते हैं, उनमें से कोई तो सजाए-आमाल (कर्मफल-भोग) के लिए कयामत का दिन नियत करते हैं और कोई पुनर्जन्म द्वारा अर्थात् एक शरीर के त्यागने पर दूसरे शरीर के द्वारा कर्मफल-भोग की रीति मानते हैं। अब दोनों में कौन-सा सिद्धान्त तर्कसिद्ध हो सकता है, इसपर आज विचार करना है, परन्तु इसके पूर्व कि हम इस विषय पर विचार करना आरम्भ करें, प्रत्येक मनुष्य के लिए यह भी जानना आवश्यक है कि 'दण्ड' का क्या अभिप्राय होता है? जहाँ तक खोज से पता चला है, यही सिद्ध होता है कि दण्ड का अभिप्राय बदला लेना नहीं किन्तु सुधार करना है, क्योंकि हम देखते हैं कि यदि एक मनुष्य चोरी करता है या किसी को मारता है तो इसके बदले उसे कारागार भेज देते हैं। क्या कारागार में जाकर अपराधी दुष्कर्म का बदला पाता है? नहीं ! यदि बदला मिलता तो कारागार में उससे रुपये माँगे जाते, क्योंकि उसने चोरी से उठाये थे, या उसको भी मारा जाता, परन्तु वहाँ ये दोनों बातें नहीं होतीं, किन्तु हम देखते हैं कि उसे मारने के स्थान पर उसके हाथों में हथकड़ी लगा दी जाती है, क्योंकि वह हाथों से उठाता था, पाँवों में बेड़ी डाल दी जाती है, क्योंकि पाँवों की सहायता लेकर भागा। सुतरां जिन दो इन्द्रियों से चोरी की टेव डाली थी उनके अभ्यास को मिटाने के लिए उनकी शक्तियों को कुछ दिन के लिए निकम्मा कर दिया, जिससे कि वह उस बात को भूल जाए और कारागार से निकलकर पुनः ऐसे अपराध को न करे। यद्यपि हम देखते हैं कि बहुधा बन्दी कारागार से लौटकर भी चोरी करते हैं, परन्तु उसका कारण केवल यह है कि प्रथम तो मनुष्यकृत सरकार की यह शक्ति नहीं कि बुराई की जड़ मन को अधीन बना सके, क्योंकि सर्व कार्य मन द्वारा ही होते हैं। यद्यपि गवर्नमेण्ट ने हाथ और पाँव को रोककर उसको कायिक पापों से रोक दिया, परन्तु पाप को स्मरण रखनेवाली शक्ति उसके मन को न रोक सकने के कारण अर्थ सिद्ध नहीं हुआ। यदि सरकार में यह शक्ति होती कि किसी प्रकार वह मन को अधीन बना सकती तो कोई भी बन्दी कारागार से निकलकर चोरी करता? एक बात और भी ध्यान देने योग्य है कि जितने मनुष्य चोर होते हैं वे जितने कर्म करते हैं उनके पाप-पुण्य का उत्तरदाता लोग होते हैं।

जैसे एक मनुष्य एक रुपया नित्य कमाता है तथा चार आना नित्य व्यय करता है तो वह बारह आना नित्य बचा लेता है। यदि चार आना नित्य कमाता है तथा एक रुपया नित्य व्यय करता है तो बारह आना नित्य ऋणी हो जाता है, परन्तु कारागार में इसके सर्वथा विपरीत दशा है - वहाँ न तो कोई बचा सकता है, न भविष्य के लिए एकत्र कर सकता है और न ही ऋणी हो सकता है। मानो वह ऐसी दशा है जिसमें आगे के लिए हानि-लाभ करने की कोई शक्ति नहीं। इसके अतिरिक्त यह भी जानने योग्य है कि शरीर और आत्मा का सम्बन्ध मकान और मकीन (निवासी और स्वामी) का है। आत्मा शरीर में रहकर तो कर्मफल-भोग करता है और आगामी जीवन के लिए प्रबन्ध करता है। जिस प्रकार कोई जीव बिना घर के रह नहीं सकता और न ही काम कर सकता है, इसी प्रकार आत्मा भी बिना शरीर के कर्मफल नहीं भोग सकती। संसार में दो प्रकार के घर हैं-

(१) वे घर जिनमें रहकर मनुष्य हानि-लाभ उठाते हैं। जैसे कोई कङ्गाल तो अपने कर्मों से धनी हो जाता है और कोई धनवान् अपनी मूर्खता एवं दुराचार के कारण कङ्गाल बन जाता है, और

(२) कारागार, जिसमें केवल कर्म-फल भोगते हैं, भविष्य के लिए कोई प्रबन्ध नहीं कर सकते, उसका समस्त सम्बन्ध केवल वर्तमान समय से होता है। इसी प्रकार परमात्मा ने भी जीवों के लिए दो ही प्रकार के घर बनाये हैं-

(१) वे जिनमें बैठकर जीव भले-बुरे कर्म कर सकता है और उससे अपने भविष्य का बिगाड़ या सुधार कर सकता है और हर समय कर्म करने में स्वतन्त्र रहता है। इसे कर्तव्य-योनि कहते हैं अर्थात् ऐसा शरीर जिसमें कि मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र है, और.

(२) दूसरे, जो कारागार की भाँति है जो केवल बुराई की बान (स्वभाव) को छुड़ाने के लिए तथा कर्मफल भोगने के लिए नियत हैं, जिनमें बैठकर जीव भविष्य के लिए कोई प्रबन्ध नहीं कर सकता, उसे भोक्तव्य योनि कहते हैं। अब जिस प्रकार स्वतन्त्र मनुष्य पाप करके कारागार में जाते हैं और बन्दी बनाकर दण्ड देने का अभिप्राय सिद्ध हो सकता है, अन्यथा ऐसी दशा में दण्ड देना जबकि उसे पता ही नहीं कि उसने कौन-सा बुरा कर्म किया था जिसके अपराध में यह दण्ड मिला, न तो कुछ लाभकारी हो सकता है और न ही यह न्याय कहा सकता है। इसका उत्तर यह है कि दण्ड का अभिप्राय उस कुटेव को भुला देना है कि जिसका दण्ड उसे भोगना है। यदि उसे पाप का स्मरण है तो उसके करने की रीतियाँ भी स्मृति में होंगी। सुतरां जिस टेव को छुड़ाने के अर्थ दण्ड दियो गया था वह तनिक भी न छूटेगी और दण्ड का अभिप्राय सिद्ध न होगा।

कतिपय मनुष्यों का यह आक्षेप है कि जिस प्रकार संसारी गवर्नमेण्ट प्रत्येक अपराधी को उसका अपराध बतलाकर उसे दण्ड देती है, इसी प्रकार परमेश्वर को भी अपराध बताकर दण्ड देना उचित है, जिससे कि भविष्य में अपराधी उस पाप से बचे। इसका उत्तर यह है कि मनुष्यकृत गवर्नमेण्ट अल्पज्ञ है और वह किसी अपराध को बिना साक्षी के सिद्ध नहीं कर सकती, अतः वह प्रथम अपराध लगाकर उसके सम्बन्ध में साक्षी आदि द्वारा अपना निश्चय दृढ़ करती है, और दूसरे, गवर्नमेण्ट का दण्ड बहुधा मेट भी दिया जाता है, क्योंकि बड़ा न्यायालय छोटे न्यायालय के अन्वेषण को सत्य नहीं समझता, अतः अपराधी को अपना निर्दोष होना सिद्ध करने के लिए उसके अपराध की सूचना दी जाती है, परन्तु परमेश्वर का न्यायालय सर्वज्ञ है, अतः न तो उसे साक्षियों की आवश्यकता है और न ही उसकी अपील (अभ्यर्थना) हो सकती है, क्योंकि उसमें भूल नहीं होती। अपील व पुनर्निरीक्षण केवल भूल को दूर करने के लिए की जाती है। यही कारण है कि मनुष्यकृत न्यायालय के बन्दी कारागार से मुक्त होकर भी उन्हीं पापों को करते हैं जिनके कारण वे कारागार गये थे, क्योंकि, जिन पापों की आदत छुड़ाने के लिए गवर्नमेण्ट ने उन्हें कारागार में भेजा था उनकी स्मृति मन में विद्यमान है। यद्यपि हाथों में उसकी टेव न्यून हो गई, परन्तु मन में रहने के कारण पूर्णतया नष्ट नहीं हुई और मन को बन्दी बनाना सांसारिक गवर्नमेण्ट की शक्ति से बाहर है।

फलतः जहाँ वह मन में पाप की स्मृति रखता है और उसके करने की रीति की भी स्मृति रखता है, वहाँ पाप के दण्ड की भी स्मृति रखता है, परन्तु परमात्मा ऐसी अपूर्ण शक्ति नहीं । उसके कारागार अर्थात् पशुयोनि में जाते ही सबसे प्रथम मन को अधीन किया जाता है और मन के अधीन हो जाने से मन का सम्पूर्ण काम अर्थात् पुरानी बातों की स्मृति तथा उसके फलस्वरूप आगे के लिए इच्छा करना पूर्णतया नष्ट हो जाते हैं, अतः जब मन कोई कार्य नहीं करता तो आगे और पीछे का वृत्तान्त स्मरण रखना और सोचना किस प्रकार हो सकता है। जो बात पुनर्जन्म के आशय को पूरा करनेवाली है उसको पुनर्जन्म के विरोध में रखना, पुनर्जन्म को न मानना उचित नहीं। स्मृति मन का काम है, जीवात्मा का नहीं, अतः जिन अवस्थाओं में मन का जीव के साथ सम्बन्ध नहीं होता उस समय कुछ भी स्मरण नहीं रहता, जिसकी साक्षी सुषुप्ति-अवस्था है। यदि सुषुप्ति-अवस्था में जब मन कार्य नहीं करता कोई स्मृति रहती तो आक्षेप ठीक हो सकता था।

बहुत-से मनुष्य यह आक्षेप करते हैं कि यदि पशुयोनि में स्मृति न रहे तो मनुष्य-शरीर में आने से तो पुरानी बातें याद आनी चाहिए। उसका स्पष्ट उत्तर यह है कि पशुयोनि में मन की स्मरण-शक्ति के निकम्मा रहने के कारण उसकी ऐसी दशा हो जाती है कि बिना ठीक संस्कार हुए स्मरण रखने तथा समझने योग्य नहीं रहती। इसका प्रमाण उन बालकों की शिक्षा से मिलता है जो पशुयोनि से नरयोनि में आये हैं, जैसे एक कारीगर जब अधिक समय तक काम न करे तो उसके हाथ की सफाई बिगड़ जाती है और थोड़े समय तक वह काम करने से फिर प्रकट हो जाती है, इसी प्रकार मन की स्मरण-शक्ति मनुष्य-जन्म पाकर थोड़े दिनों में इस योग्य होती है कि वे स्मरण रख सकें। इसके अतिरिक्त मन में भी उस वस्तु के, जिसके साथ उसका सम्बन्ध होता है, संस्कार पड़ते जाते हैं। जो वस्तु निकल जाती है उसके संस्कार दब जाते हैं, और जो वस्तु सम्मुख रहती है उसके संस्कार बने रहते हैं। इस प्रकार गई हुई बातों को स्मरण करने के लिए चित्त की वृत्तियों को एकाग्र करके, नवीन विचारों से हटाकर प्राचीन विचारों को जानना पड़ता है। सुतरां जो मनुष्य योग के द्वारा प्राचीन विचारों को जानना चाहते हैं वे जान सकते हैं। उदाहरणार्थ एक कोठे में दो सौ मन गेहूँ डाल दिए हैं, तत्पश्चात् छः सौ मन चना डाल दिया। अब प्रकट में इन आँखों से गेहूँ नहीं देख सकते, जबतक कि उसके ऊपर से चनों को न हटाया जाए। इसी प्रकार प्राचीन संस्कारों को जानने के लिए मन को नवीन संस्कारों से पृथक् करने की आवश्यकता है, जिसका साधन सिवाय योग के दूसरा नहीं। योगिजन अपने पिछले हाल और जन्मों को भलीभाँति जान सकते हैं, परन्तु सर्वसाधारण नहीं जान सकते, इसीलिए योगिराज कृष्ण ने अर्जुन को गीता में कहा था

बहूनि में व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुन।
तान्यहं वेद सर्वाणि न त्वं वेत्थ परन्तप।।

---गीता ४।५

हे अर्जुन ! मेरे और तेरे बहुत-से जन्म हो चुके हैं जिनको तू योगविधि न जानने के कारण नहीं जान सकता और मैं जान सकता हूँ।

केवल हिन्दुओं में ही इसका प्रमाण नहीं मिलता, किन्तु मुसलमान योगी भी जिन्होंने ईश्वरोपासना द्वारा चित्त की वृत्तियों को एकाग्र कर लिया है इस बात को मानते हैं कि हमारे

क्रमशः.....६ पर

पुण्यतिथि पर शत शत नमन

आज फिर सरदार पटेल की याद आ रही है

–पंडित प्रकाशवीर शास्त्री

सरदार पटेल के काम करने और निर्णय लेने के ढंग से लोग अच्छी तरह परिचित हो गए थे। कभी कोई बात उनके मुख से निकल गई तो समझिये वह पत्थर की लकीर हो गई । पाकिस्तान भी सरदार के इस स्वभाव से परिचित हो गया था। पूर्वी बंगाल से प्रारम्भ में जब लाखों हिन्दू धक्का देकर बाहर निकाले जा रहे थे , तब सरदार के धैर्य का बाँध एक दिन टूट गया । भले ही उनका एक अलग देश बन गया था । कल तक तो वह अपने ही भाई थे। विभाजन के समय गांधी जी से लेकर नीचे तक के सभी नेताओं ने उन्हें यह आश्वासन दिया था -- देश भले ही दो बन गये हैं पर एक दूसरे के सुख - दुख में हम पहले की तरह ही भागीदार रहेंगे । कभी तुम पर कोई मुसीबत का पहाड़ टूटेगा तो हम मूक दर्शक बने नहीं देखते रहेंगे । इसीलिए गांधी जी ने एक बार पूर्वी बंगाल में अल्पसंख्यकों के नर - संहार का समाचार सुन कर सरकार को सेना भेज कर उनकी रक्षा करने का परामर्श दिया था । पर सरदार ने सोचा पहले चेतावनी दे कर देख लिया जाये । उससे यदि काम न चला तो फिर अगला कदम उठाया ही जायेगा । पाकिस्तान को उन्होंने कहा यदि तुम्हें इन अल्पसंख्यकों का वहाँ रहना नहीं सुहाता तो उन्हें थोड़ा - थोड़ा कर के भेजने की बजाय अच्छा यह हो एक साथ ही सब को भेज दो । उसके बदले में भारत से उतने ही अल्पसंख्यक तुम ले लो । यदि यह सुझाव पसन्द न हो तो फिर पाकिस्तान पूर्वी बंगाल की उतनी भूमि हमें दे दे जिससे वहां इन्हें बसाया जा सके । पर यदि यह दोनों सुझाव भी तुम्हारे गले से नीचे नहीं उतरते तो फिर भारत अगला निर्णय लेने में स्वतंत्र रहेगा । उनकी इस चेतावनी से पाकिस्तान वाले समझ गये अब सरदार कुछ ठोस कदम उठाने की सोच रहे हैं । झट एक समझौता दोनों देशों के प्रधानमंत्रियों के बीच हो गया जो नेहरू - लियाकत पैक्ट के नाम से प्रसिद्ध है ।

किसी भी नेता के नेतृत्व की कसौटी समय पर सही निर्णय लेने में ही होती है । जूनागढ़ , हैदराबाद और काश्मीर ये तीनों रियासतें ऐसी थीं जो भारत में विलय के लिए चुनौती बन गई थीं । जनता की राय से जूनागढ़ रियासत के भविष्य का फैसला होना था । नवाब जूनागढ़ स्वयं रियासत के भारत में विलय के पक्ष में नहीं थे । इसलिये जनमत संग्रह की बात बीच में आई। जनमत संग्रह होते ही सरदार ने कुछ ही दिनों में उसका परिणाम नवाब के सामने रख दिया । इस तरह जूनागढ़ सदा के लिए भारत का अभिन्न भाग बन गया। हैदराबाद का निजाम भी रजाकारों के चक्कर में आकर सरदार को हैदराबाद में उँगली नहीं रखने दे रहा था । सरदार ने सोचा यदि देर तक इसी हालत में हैदराबाद को रहने दिया गया तो यह कहीं भारत के लिए नासूर न बन जाय ? पर कच्चे घाव का आपरेशन करना भी वह नहीं चाहते थे । एक दिन जब फोड़ा पक गया तो सरदार ने एक नश्तर में ही सारा मवाद निकाल कर बाहर कर दिया । आसफजाही झंडा जो कभी लाल किले पर फहराने के स्वप्न देख रहा था वह सदा के लिए दफना दिया गया और अशोक चक्रांकित तिरंगा ध्वज हैदराबाद की किंग कोठी पर शान से लहराने लगा । वह ही हैदराबाद आज आन्ध्रप्रदेश की राजधानी है । काश्मीर रियासत का हल शेख अब्दुल्ला के चक्कर में आकर न जाने क्यों अन्य रियासतों की तरह सरदार को नहीं सौंपा गया । केवल १९४७ में पाकिस्तानी हमलावरों को निकालने का काम ही उन्हें दिया गया । पर उसमें भी जब अन्तिम दिनों में काश्मीर से खूंखार पाकिस्तानी दरिंदे बाहर निकाले जा रहे थे तब सरदार से बिना पूछे अचानक बीच ही में लड़ाई बन्द कर दी गई । जो हिस्सा काश्मीर का उस समय बच गया वह आज भी पाकिस्तान के अधिकार में है । शेष काश्मीर का भविष्य भी अभी तक अधर में ही लटका हुआ है । अपने ही संविधान की धारायें उसमें बाधक बनी हुई हैं । अरबों रुपया काश्मीर पर व्यय हो गया । हजारों मां के लाल मौत के मुंह में सो गये । फिर भी काश्मीर अभी त्रिशंकु की स्थिति में ही है । डाकखाने के भवन बनाने और रेलवे लाइन बिछाने के लिए भी भारत के राष्ट्रपति को निन्यानवे साल के पट्टे पर जमीन लेनी पड़ती है । सरदार न होते तो अभी पता नहीं कितनी और देशी रियासतें भारत के गले में हड्डी बन कर अटकी रहतीं । यह प्रतिभा और साहस , भगवान ने सरदार को ही दिया था - जो खून की एक बूंद गिराये बिना उन्होंने साढ़े तीन सौ राजा - महाराजाओं के मुकुट उतरवा कर भारत माता के चरणों में रखवा दिये ।

कभी - कभी एक यह भी प्रश्न लोग पूछते हैं - जब सरदार पटेल भारतीय एकता के इतने कट्टर समर्थक थे , तो उन्होंने गांधी जी के साथ मिल कर देश का विभाजन रोकने में सहयोग क्यों नहीं दिया ? आज पाकिस्तान जो सदा के लिए भारत की छाती का कांटा बन गया है , उसके निर्माण में सरदार ने भी अपनी सहमति क्यों प्रदान कर दी ? पर जो १९४७ से पहले की परिस्थितियों से परिचित हैं वह शायद यह प्रश्न उतनी आसानी से न करें । अंग्रेजों ने मुस्लिम लीग की कमर पर हाथ रख कर देश में जो घोर साम्प्रदायिक वातावरण उन दिनों बना रखा था और स्वयं खुल कर उसकी कमर पर आ गये थे, उससे निबटने का और कोई दूसरा ऐसा प्रकार ही नहीं था कि पहले हर कीमत पर अंग्रेजों को भारत से बाहर किया जाय । उसके जाने के बाद फिर वापस में मिल बैठ कर देश की एकता के लिए और साम्प्रदायिक सद्भाव बनाये रखने के लिए वातावरण तैयार किया जाए ।

राजेन्द्र बाबू ने अपनी 'खंडित भारत' नामक पुस्तक में विभाजन से कई वर्ष पूर्व यह लिखा था - पाकिस्तान यदि बन भी गया तो वह देर तक अपने पैरों पर खड़ा नहीं रह सकेगा । पर सरदार पटेल उसके लिए बहुत लम्बी प्रतीक्षा नहीं करना चाहते थे । बंगला देश में जो मुक्ति संघर्ष आज चल रहा है सरदार की निगाह में यह भविष्य उन्हीं दिनों झांक रहा था । वह यह अच्छी तरह जानते थे - पूर्वी बंगाल कभी पाकिस्तान के साथ नहीं रह सकेगा । सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टि से भी दोनों में जमीन आसमान का अन्तर है । पश्चिमी पाकिस्तान में भी पठान कभी पंजाबी मुसलमानों का आधिपत्य स्वीकार नहीं करेंगे। इसी से मिलती जुलती स्थिति कुछ सिन्ध में उन लोगों की भी थी जिन्होंने आज जीये सिंध आन्दोलन छेड़ रखा है । इस तरह अंग्रेजों के हटते ही जब फिर देशवासी वास्तविकता को पहचानेंगे तो भारत को एक होने में अधिक समय नहीं लगेगा । सौभाग्य से पाकिस्तान बनते ही उन क्षेत्रों में वह हवा उठी भी । पर भारत की ओर से कोई समुचित सहयोग न मिलने से बीच में ही दब कर रह गई । एक बार तो सुनते हैं स्वयं नेपाल के पहले शासक महाराज त्रिभुवन ने स्वयं अपनी ओर से नेपाल के भारत में विलय का प्रस्ताव रखा था । उनका विचार था जब भारत और नेपाल एक ही सांस्कृतिक परिवार के सदस्य हैं तब क्यों न नेपाल को स्वाधीन भारत का अंग बना दिया जाय । परन्तु हमारे ही कुछ नेताओं ने यह कह कर उस प्रस्ताव की गम्भीरता को न पहचाना - कहीं दुनिया इसे नेपाल को भारत द्वारा हड़पने की संज्ञा न दे ? सरदार उस समय तक दुनिया से जा चुके थे । इसलिए भी नेपाल का वह प्रस्ताव कुछ बड़ों के बीच में ही चर्चा का विषय बन कर रह गया ।

सरदार पटेल देश भक्तों को ऊँचे से ऊँचा सम्मान देने के जहां हिमायती थे वहां देशद्रोहियों के लिए उनके मस्तिष्क में कहीं कोई गुंजाइश नहीं थी। भारत विभाजन के पूर्व गढ़मुक्तेश्वर के मेले में हुए साम्प्रदायिक उपद्रव को दबाने में तत्कालीन मेरठ के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक ने जिस तत्परता से काम लिया उससे वह सरदार की निगाह में चढ़ गया । हैदराबाद के भारत में विलय के पश्चात उसे ही राज्य का इंस्पेक्टर जनरल पुलिस बना कर सरदार ने भेजा । परन्तु कुछ ही समय बाद जब उसके अपने निवास स्थान के बराबर वाली कोठी में ही रहने वाले रियासत के भूतपूर्व मंत्री श्री लायक अली छिप कर पाकिस्तान चले गये और उक्त इंस्पेक्टर जनरल पुलिस सोते रहे तो सरदार की निगाह से उनके गिरने में भी एक मिनट न लगी । ऐसी ही स्थिति राज्य के एक वरिष्ठ राजनीतिक नेता की भी हुई। हैदराबाद में हुए राजनीतिक संघर्ष में वह महात्मा पूरी तरह चमके। सरदार ने उन पर विश्वास कर के राज्य का प्रमुख राजनीतिक दायित्व ही पूरी तरह उन्हें सौंप दिया। राज्य के तत्कालीन प्रशासक श्री के . एम . मुंशी भी उनका पूरा सम्मान करते थे। परन्तु बाद में कुछ ऐसी घटना घटी जो सरदार को उनकी ओर से अपना मुंह मोड़ने में भी क्षण भर की देर न लगी सार्वजनिक जीवन में व्यवहार शुद्धि का सरदार बहुत ध्यान रखते थे ।

हिन्दू हो या मुसलमान कोई भी जो भारत में रह कर दूसरे देशों के एजेन्ट का काम करते थे , उसे सरदार कभी सहन नहीं करते थे । हैदराबाद विजय के पश्चात फतह मैदान में हुई सार्वजनिक सभा में सरदार पटेल ने खुले शब्दों में कहा - यदि अब भी कुछ व्यक्ति यहां ऐसे रह गये हों जो पाकिस्तान के समर्थक हों तो वह अभी मौका है आज ही भारत छोड़ दें । मैं उनके जाने के लिए पूरी व्यवस्था कर दूंगा । रास्ते में उन्हें कोई कठिनाई नहीं होगी । यह ही बात उन साम्यवादियों के सम्बन्ध में भी थी जो भारत में रह कर चीन और रूस के स्वप्न लेते रहते थे । जब तक सरदार रहे तब तक वह लोग आसानी से सिर न उठा सके । क्योंकि वह जानते थे - इस व्यक्ति के आगे आसानी से हमारी दाल गलने वाली नहीं है । उनके जाने के बाद फिर धीरे - धीरे वह उभरते चले गये । बंगाल में उनका असली चेहरा देखा जा सकता है ।

सरदार पटेल स्वयं जीवन में जितनी सरलता और सादगी की मूर्ति थे उतना ही देश को भी वह उस ओर ले जाना चाहते थे । उनके चिन्तन के ढंग और कार्य करने की पद्धति से प्रदर्शन की मात्रा बहुत कम थी । इसीलिए सरदार को जीवन में उनके अपने साथियों ने भी पूरी तरह नहीं पहचाना । पहले से भी महापुरुषों को उनके जाने के बाद ही कहीं अधिक अच्छा समझा जाता रहा है। अब से लगभग डेढ़ वर्ष पहले चक्रवर्ती श्री राजगोपालाचार्य ने मद्रास की एक सार्वजनिक सभा में इसी तरह के एक रहस्य का उद्घाटन किया । गांधी जी ने उनसे पूछा - स्वतंत्र भारत का पहला प्रधान मंत्री कौन ठीक रहेगा ? राजा जी ने कहा श्री नेहरू के पक्ष में ही उन्होंने भी अपनी राय गांधी जी को दी । परन्तु उस सभा में राजा जी का कहना था प्रधान मंत्री कहीं सरदार होते तो देश के सोचने , काम करने और निर्णय लेने के ढंग ही कुछ भिन्न होते । सरदार के सम्बंध में ऐसी ही अपनों भूलो को कुछ उन लोगों ने भी स्वीकार किया है जिन्होंने कई बार सरदार पर उनके जीवन में पत्थर बरसाये थे । अब वह भी पछताते हैं और कहते हैं हम उस महान व्यक्ति को पहले समझ नहीं पाये ।

स्वतन्त्रता के बाद कुछ लोगों ने सरदार के काम करने के ढंग से अप्रसन्न होकर गांधी जी के मन में भी यह बात बैठा दी कि सरदार उनको पसन्द नहीं करते । विशेष कर तब जब गांधी जी ने पाकिस्तान को पचास करोड़ रुपया देने के लिए दिल्ली में आमरण अनशन किया था । और भी कई इसी तरह की बातें थीं जिन्हें ले कर सरदार को गांधी जी से बहुत दूर करने का प्रयत्न किया गया । परन्तु सरदार के मन में गांधी जी के प्रति पूर्ण सम्मान और श्रद्धा थी । यह बात दूसरी थी - उसको वह कभी अपने स्वभाव के अनुरूप प्रदर्शित नहीं करते थे । गांधी जी के बलिदान के बाद भी कई ऐसे ही लोगों ने सरदार पर उसका दोष थोपना चाहा । उनका कहना था - सरदार ने यदि गांधी जी की पूरी सुरक्षा की व्यवस्था की होती तो उन्हें इतनी जल्दी न जाना पड़ता । इसमें जब कुछ हलके लोगों ने सरदार की नीयत पर भी सन्देह किया तो वह मर्मान्तक वेदना उनके लिए प्राण घातक ही सिद्ध हुई । उनके निकटवर्ती सूत्रों का कहना है यह दुःख ही शायद सरदार को इतनी जल्दी ले गया । अन्यथा तो वह कुछ दिन और जीवित रहते ।

पीछे जब चीन और पाकिस्तान से भारत का युद्ध हुआ था तब सूझ - बूझ वाले एक सफल योद्धा के रूप में सरदार की देशवासियों को बड़ी याद आई । आज फिर जब भारतीय सीमाओं पर युद्ध के बादल मंडरा रहे हैं तब भी रह - रह कर सरदार का स्मरण हो आना स्वाभाविक है । सरदार का विश्वास था - जिसके साथ कभी स्वप्न में भी मित्रता की संभावना ही नहीं हैं उसे केवल घायल कर के ही न छोड़ दिया जाय । हाथ उठाया जाय तो पूरी शक्ति से ही उठाया जाय । दुनिया क्या कहेगी ? इससे भी अधिक यह सोचना जरूरी है - हमारा भविष्य कहां सुरक्षित हैं ? सरदार पटेल कहीं यदि दस पाँच साल और जीवित रह गये होते तो भारत का मानचित्र ही आज कुछ और होता।

प्रस्तुति-अमित सिवाहा

पृष्ठ ४ का शेष.....

बहुत-से जन्म हो चुके हैं। देखो मौलाना रूम लिखते हैं

हमचु सब्जा बारहा रोईदः ऐम।
हफ्त सद हप्ताद कालिब दीदः ऐम।।

अर्थात् सात सौ सत्तर बार जन्म लिया है।

कतिपय लोग यह आक्षेप करते हैं कि पाप तो मनुष्य ने किया और दण्ड भोगें पशु-यह तो अन्याय है! परन्तु उनका यह विचार नितान्त असत्य है, क्योंकि मनुष्य-शरीर तथा पशुयोनि केवल जीवात्मा के कर्मानुसार आनन्द और दुःखभोग के लिए दो घर हैं। संसार में ही देखा जाता है कि पाप करते हैं घर में और दण्ड भोगते हैं कारागार में, परन्तु कोई इसे अन्याय नहीं कहता, क्योंकि कारागार या घर से कोई सम्बन्ध नहीं, सम्बन्ध केवल मनुष्य का है। इसी प्रकार मनुष्य-शरीर या पशुयोनि का कर्म और दण्ड से कोई सम्बन्ध नहीं, किन्तु दण्ड केवल जीवात्मा को कर्म करने में स्वतन्त्रता का न होना है। कतिपय मनुष्य जीव को शरीर से पृथक् नहीं मानते जोकि स्पष्ट भूल है, क्योंकि शरीर तत्त्वों से बना हुआ है जो नाश होकर अपने स्वरूप में मिल जाते हैं, परन्तु जीव प्रकृति का गुण या गुणी नहीं, क्योंकि जीवात्मा का गुण-ज्ञान प्रकृति में नहीं। यदि ज्ञान को भी प्रकृति का गुण मान लिया जाए तो मृत्यु तथा सुषुप्ति का होना असम्भव होगा, क्योंकि प्राकृतिक शरीर से ज्ञान जो उसका गुण है किसी अवस्था में पृथक् नहीं हो सकता। एक इस्लाम नगरी साहिब रघुबर शरण नामी ने इसी पुस्तक 'तरदीदे तनासुख' में यह लिख दिया कि ज्ञान बुद्धि का गुण है, क्योंकि जो काम ज्ञान से सम्बन्ध रखते हैं वह बुद्धि से होते हैं। अब प्रश्न यह उठता है कि बुद्धि प्राकृतिक है या अप्राकृतिक? यदि कहो कि प्राकृतिक है तो ज्ञान प्रकृति के गुणों में सम्मिलित हो जाएगा, और जब ज्ञान प्रकृति में होगा तो कोई वस्तु जड़ नहीं हो सकती, इस प्रकार जड़ और चेतन का भेद उड़ जाएगा, क्योंकि संसार की प्रत्येक वस्तु प्रकृति से बनी हुई है।

अब फिर यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि ज्ञान मूलतत्त्व का गुण है या मिश्रित का? यदि मूलतत्त्व का है तो अग्नि आदि में भी ज्ञान का पता नहीं मिलता। यदि कहो कि मिश्रित में होता है तो नितान्त असत्य है, क्योंकि जो गुण मूलतत्त्व के भाग में न हो वह मिश्रित में कैसे आ जाएगा, जैसे बीस उष्ण ओषधियों को पिलाने से कभी शीतलता नहीं हो सकती जबतक ओषधि शीतल न हो, क्योंकि समस्त विद्वान् और विज्ञानवेत्ता इस बात से सहमत हैं कि प्रकृति में गति नहीं, यदि प्रकृति में गति होती तो जिस गेंद को हम फेंकते हैं वह लगातार चलती जाती, परन्तु होता इसके विरुद्ध है, अर्थात् जहाँ तक हमारी शक्ति से गेंद चल सकी चली गई और आगे जाकर रुक गई, अतः ज्ञान और गति प्रकृति के गुण नहीं हैं। यदि बुद्धि को अप्राकृतिक माना जाए तो वह जीवात्मा का दूसरा नाम होगा। कई लोग पुनर्जन्म के विरुद्ध यह युक्ति देते हैं कि संसार में मनुष्य से प्रथम पशु बने हैं, परन्तु यह बात भी अनभिज्ञता का प्रमाण है, क्योंकि जिस प्रकार रात्रि-दिवस का क्रम है कि रात्रि के पीछे दिवस तथा दिवस के पीछे रात्रि होती है और जिस भाँति कृष्णपक्ष के पीछे शुक्लपक्ष और शुक्लपक्ष के पश्चात् कृष्णपक्ष होता है और जैसे दक्षिणायण के पश्चात् उत्तरायण तथा उत्तरायण के पीछे दक्षिणायण होता है, यही क्रम प्रलयकाल तक पहुँच जाता है एवं जिस प्रकार मनुष्य प्रातःकाल उठकर पिछले दिन के लेन-देन के अनुसार कार्यारम्भ कर देते हैं, इसी प्रकार सर्वदा सृष्टि के आरम्भ में पिछली सृष्टि के क्रमानुसार पशु तथा मनुष्यादि जन्म लेते हैं। यह भूल तो केवल वही मनुष्य करते हैं जिनके धर्मग्रन्थ १३००, १९००, २६०० या ३४०० वर्ष पुराने हैं, क्योंकि इनके पूर्व का वृत्तान्त उन्हें ज्ञात नहीं, परन्तु कुरान में भी कुछ पता पुनर्जन्म का चलता है (देखो सूरए बकर पृष्ठ ७, मितरज्जिम कुरान छापा नवलकिशोर कानपुर, पंचम संस्करण, पंक्ति १३)

तुम मुर्दे (मृतक) थे, जिलाया तुमको, फिर मुर्दा (मृतक) करेगा और फिर जिलाएगा, फिर तर्फ उनके आगे फिर जाओगे।

पाठकगण ! पहले मृतक कहने से स्पष्ट विदित होता है वह कभी मरे थे, अब फिर जन्मे, फिर मरेंगे और फिर जन्म लेंगे। हमारे कतिपय मित्र इसका यह अर्थ करते हैं कि ईश्वर ने प्रथम अभाव से भाव किया। अभाव का नाम मृतक होता है और जन्म लेना भाव का नाम है, अब फिर अभाव कर देगा और फिर भाव करेगा। कतिपय मनुष्य इसे कयामत (प्रलय) के सम्बन्ध में बताते हैं, अर्थात् प्रथम ईश्वर ने मनुष्य को मृतक से जीवित किया, इसके पीछे मर जाएँगे और कयामत के दिन फिर जीवित होंगे, परन्तु ये दोनों बातें टिप्पणी मात्र हैं, और वास्तविक अर्थ के नितान्त विरुद्ध हैं, क्योंकि मृत्यु शरीर और जीवात्मा का वियोग है तो मानो पहले शरीर और जीवात्मा पृथक् थे। खुदा ने उनको मिलाकर जीवित किया, फिर पृथक् करेगा और फिर जीवित करेगा, यावत् वे खुदा की ओर न फिर जावें अर्थात् मुक्त न हो जावें।

कतिपय मुसलमानों का यह आक्षेप होगा कि मनुष्य के जीवात्मा का पशु-शरीर में प्रवेश करना पुनर्जन्म है और इससे इस बात का कोई प्रमाण नहीं मिलता, परन्तु कुरान शरीफ में यह भी दिखाया है कि एक कौम (जाति) पर नाराज होकर खुदा ने आज्ञा दी कि वे सूअर और बन्दर हो जावें।

अब बहुत-से लोग कहते हैं कि वे जीते जी बन्दर और सूअर हो गये। प्रथम तो यह बात ही असत्य है, परन्तु इस असम्भव को भी सम्भव मानकर हम कह सकते हैं कि मनुष्य-जीवात्मा का कर्मफल-भोग के लिए पशुयोनि में आना कुरान से सिद्ध है।

संसार में कोई मनुष्य पुनर्जन्म को माने बिना ईश्वर के गुणों को पूर्णतया सिद्ध नहीं कर सकता। जितने आक्षेप पुनर्जन्म के विरोधियों की ओर से किये जाते हैं, वे केवल अनभिज्ञता के कारण होते हैं, अन्यथा कोई भी बुद्धिमान् पुनर्जन्म पर आक्षेप नहीं कर सकता।

पुनर्जन्म के समर्थन में प्रकृति के नियम में पग-पग पर उदाहरण विद्यमान हैं, परन्तु कतिपय मनुष्य शरीर को जीवात्मा का निवासस्थान नहीं बताते, किन्तु जीव को शरीर का सार मानते हैं। इसी प्रकार और भूलें हैं जिसके कारण वे जीवात्मा का दूसरे शरीर में जाना उसके रूप का बदलना मानते हैं। समस्त झंझट जो पुनर्जन्म के विरुद्ध फैला हुआ है, वह केवल प्रकृति और जीव को अनादि न मानने के कारण उत्पन्न हुआ है, अतः प्रत्येक मनुष्य को प्रकृति और जीवात्मा के अनादित्व पर हमारे लेख 'प्रकृति का प्राचीनत्व (माद्दे की कदामत) और जीवात्मा' के अस्तित्व में प्रमाण देखना चाहिए। यदि इसपर भी शान्ति न हो तो 'रद्द-तनासुख' का उत्तर जो पादरी गुलाम मसीह के उत्तर में लिखा गया है देखना उचित है।

आदर्श गुरु को आदर्श दक्षिणा

-डॉ.विवेक आर्य

गुरुचरणसरोजद्वन्दसेवाप्रसादै-रधि गत शुभ विद्या तृप्त चेता व्रतीन्द्रः।
कृतन तिर तिनम्रो देव पुष्पाणि पाणौ गुरुवरमुपसन्नः श्रद्धयोवाच धृत्वा।।

स्वामी दयानन्द ने गुरुचरणरूपी कमलयुगल की सेवा रूप प्रसाद से शुभ विद्याएँ प्राप्त कर ली थीं। इसलिए व्रतीन्द्र दयानन्द प्रसन्न मन से (गुरु को भेंट देने के लिए) हाथों में लौंग लेकर अतिनम्रता और श्रद्धा गुरु के पास आये और भक्तिसहित प्रणाम करके बोले।

अनुपम कृपयाऽस्मै ज्ञानमचार्यवर्यैर्बलवदुपकृतोयंसंप्रदायात्मपुत्रः।
उपकृतिमणिमूल्यं जीवनस्पर्शनेन प्रतिवितरितुमिशो नैव नूनं भवेयं।।

हे गुरुदेव! अनुपम कृपा से आपने इस पुत्र को सम्पूर्ण विद्या प्रदान करके अति उपकृत किया है। इस उपकाररूपी रत्न के मूल्य को जीवनदान से भी मैं सचमुच नहीं चुका सकता।

उपकृतिम तुलां ते लौकिकैश्वर्यहीनः कथमिव खलु दीनो देव निष्क्रेतु मिशः।
इति तनुमनसो मे श्री मतामिशितृत्वं समुपह्वतमिदानीं तल्ल्वङ्गैः पदाब्जे ।।

लौकिक ऐश्वर्य से हीन यह दिन बालक भला किस प्रकार आपके अतुल उपकारों से उऋण हो सकता है? इसलिए मेरे तन-मन पर आप का ही स्वामित्व है। मैं इस समय लौंगों के साथ उसी को आपके चरणकमलों पर भेंट धर रहा हूँ।

प्रमुदितमन सैवं श्रद्धयौऽऽभाष्य शिष्यं गुरुवर पद कन्जे मंजुले प्राणतं तम्।
प्रणय पुल कि तांगः सन्नि धायोत्तमांगे करकमल वोच द्वेशिकेन्द्रस्तदिये।।

इस प्रकार अतिप्रसन्न मन से श्रद्धा सहित पवित्र गुरुचरणों पर प्रणत हुए उस शिष्य के मस्तक पर प्रेम पुलकित हृदय से गुरुने हाथ रखकर कहा कि-

न सौम्य! वांछामि सुवर्ण दक्षिणां प्रयच्छ मे जीवनमेव केवलं।
स्वदेश धर्मोद्धरणाय वत्स! ते यतो नियुंजीय तदाश्रुतं कुरु।।

हे सौम्य पुत्र! मैं सोने-चाँदी की दक्षिणा नहीं चाहता, मुझे तू केवल अपना जीवन प्रदान कर जिससे कि हे पुत्र! मैं तेरे जीवन को स्वदेश एवं स्वधर्म के उद्धार में लगाऊं। इसलिए तू अपने जीवनदान की प्रतिज्ञा कर।

समर्पितं श्री चरणे स्वजीवनं नियोज्य मेनं विनियो जयेद् यथा।
वंश वदोऽयं प्रयतिष्यते तथा विचार णीया न गुरो निर्देशना।।

मैंने आपश्री के चरणों पर अपना जीवन समर्पण कर दिया। आप इस आज्ञाकारी शिष्य को जिस कार्य में लगाना चाहें लगावें क्यूंकि गुरु की आज्ञा में विचार का अवकाश नहीं होता।

उत्साह पूर्णाः निजशिष्यवाणीं निशम्य दण्डी निजगाद तुष्टः।
अद्य श्रमै र्मे फलितं नितान्तं सत्पात्रदत्ता फल तीह विद्या।।

उत्साह से भरी अपने शिष्य की वाणी सुनकर दंडीजी संतुष्ट होकर बोले- सचमुच आज मेरा सारा परिश्रम फला। सत्पात्र में दी हुई विद्या सफल ही होती है।

स्वस्त्यस्तु ते याहि दिगन्त वृन्दे वन्द्यर्षि सद्ग्रन्थनिबद्दविद्याः।
विद्यो तय प्रोज्ज्वलवेद धर्मश्री वैजयन्तीं लघुलासय त्वम् ।।

तुम्हारा कल्याण हो। तुम जाओ। महा ऋषियों के सदग्रंथों का, वेदविद्या का और उज्जवल वैदिक सिद्धांतों का देश देशान्तरों में प्रकाश करो और शीघ्र ही वैदिक वैजयंती फहरा दो।

वर्णाश्रमाचार पवित्र धर्मान् प्रसार्य लोके चलिताः कुरीतिः।
निर्वार्य विद्या महिमानमार्यान् विबोध्य कृत्वा मनुजांज्याशाः।।

वर्णों और आश्रमों के पवित्र धर्म को फैला कर संसार में प्रचलित कुरूढ़ियों का नाश कर विद्या की महिमा बताकर आर्यों को जागृत करो और दिग्विजयी बनो।

प्रणार्पणेनापि पवित्र धर्मप्रसारणां त्वं कुरु वत्स! काममू।
परोपकाराय वपुस्त वेदं समपंयतां सा गुरु दक्षिणेति।।

हे वत्स, तुम्हें प्राण भी अर्पण करना पड़े तो भी तुम पवित्र धर्म को फैलाते रहना। तुम अपने शरीर को गुरुदक्षिणा के रूप में परोपकार्थ समर्पण कर दो।

ओ३म् तीर्थवर्येति पदारविन्दे प्रणम्रमौलि र्विनिगद्य देवः।
श्रीमान् दयानन्द सरस्वतिन्द्रोजेतुं दि गन्तान्तस ततः प्रतस्थे।।

श्री दयानन्द सरस्वती ने गुरु की आज्ञा सुनकर एवमस्तु कहा, और उनके चरणों पर नतमस्तक हुए। पश्चात वे दिग्विजय के लिए गुरुगृह से निकल पड़े।

गुरो निर्देशे स्व शिरो विनामितं समर्पितम् जीवनमेव तत्क्षणं।
तदुत्तरे नैव विचिन्तं मनाङ्ग निदर्शिता सद्गुरु भक्तिरुत्मा।।

दयानन्द ने गुरु की आज्ञा पर अपना शिर झुका दिया और तत्क्षण ही अपने जीवन को समर्पित कर दिया। गुरु जी के गुरुदक्षिणा मांगने पर इन्होंने जराभी विलम्भ नहीं किया और अपनी आदर्श गुरुभक्ति का निदर्शन उपस्थित कर दिया।

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ के उप प्रधान भारतीय बोबीनाम मार्शल आर्ट के दल प्रमुख नियुक्त

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, लखनऊ के उपप्रधान व आर्य समाज लाजपत नगर, चौक के प्रधान श्री प्रत्युष रत्न पाण्डेय को भारती बोबीनाम मार्शल आर्ट की ३३ सदस्यीय टीम का प्रमुख नियुक्त किया गया। गत २२ नवम्बर से ०१ दिसम्बर, २०२३ तक वियतनाम के ''हो चिन्ह मिन्ह'' शहर में इस प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें विश्व के ३६ देशों-फ्रांस, इटली, जापान, चीन, जर्मनी, बेल्जियम, बेलारूस, अल्जीरिया, ईरान आदि ने भाग लिया।

भारत टीम ने सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए ०१ रजत व २ कांस्य पदक प्राप्त किये। भारतीय दल में मणिपुर, आसाम, गुजरात, महाराष्ट्र व उ.प्र. के खिलाड़ियों का चयन उनके राष्ट्रीय प्रदर्शन के आधार पर किया गया था। डॉ. विष्णु सहाय जी को आगामी पाँच वर्षों के लिए विश्व महासंघ के चुनाव में उपाध्यक्ष चुना गया।

काशी आर्य समाज बुलानाला, वाराणसी में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

काशी आर्य समाज, बुलानाला, वाराणसी में दिनांक २३ दिसम्बर, २०२३ को मध्यान्ह २:०० बजे स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया है।

कार्यक्रम में वैदिक यज्ञ पं. रामदेव शास्त्री के ब्रह्मत्व में होगा। कार्यक्रम में श्री रमाशंकर आर्य-अध्यक्ष व मुख्य वक्ता श्री नन्दलाल गुप्त आर्य होंगे।

सभी आर्यजनों से निवेदन है है कि पुनीत अवसर पर पहुँच कर कार्यक्रम को सफल करें व पुण्य के सहभागी बनें।

मंत्री

सम्पर्क सूत्र-९४५६६२५८८३

आर्य समाज मन्दिर हिम्मतपुर काकामयी का सुन्दरीकरण उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग द्वारा

कस्बा मारहरा का समीपवर्ती हिम्मतपुर काकामई आर्य समाज मंदिर अब भव्य और अलौकिक रूप लेगा। इसका सुंदरीकरण पर्यटन विभाग द्वारा किया जाएगा। प्रदेश सरकार के निर्देश पर पर्यटन विभाग द्वारा स्थलीय निरीक्षण कर निर्माण की कार्य योजना तैयार की जा रही है।

निधौलीकलां विकास खंड क्षेत्र के गांव हिम्मतपुर काकामई स्थित आर्य समाज मंदिर के सुंदरीकरण एवं द्वितलीय सत्संग हाल निर्माण के लिए महर्षि दयानंद सेवा समिति के उपाध्यक्ष आचार्य जयप्रकाश शास्त्री द्वारा वर्ष 2021 में तत्कालीन राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद से अनुरोध किया गया था। इस पर राष्ट्रपति द्वारा उत्तर प्रदेश सरकार से आर्य समाज मंदिर पर जल्द से जल्द निर्माण एवं सौंदर्यीकरण कराये जाने का आग्रह किया था। अब प्रदेश सरकार ने पर्यटन विभाग को दिशा निर्देश दिए हैं। शुक्रवार को पत्र के माध्यम से पर्यटन विभाग के अलीगढ़ मंडल के संयुक्त निदेशक ने बताया कि आर्य समाज मंदिर का स्थलीय निरीक्षण कर लिया गया है। निर्माण कार्य की परियोजना तैयार की जा रही है। जल्द कार्य प्रारंभ कर दिया जाएगा। ग्राम हिम्मतपुर काकामई प्रधान रामचंद्र सिंह एवं समाज सेवी रामवीर सिंह आदि द्वारा दान की गई भूमि पर आर्य समाज मंदिर का निर्माण हुआ है। यहां पद्मभूषण महाशय धर्मपाल एमडीएच वैदिक यज्ञशाला पहले से ही मौजूद है।

आर्य समाज मंदिर हिम्मतपुर काकामई • जागरण

संस्था के प्रधान प्रेमपाल शास्त्री ने बताया कि सरकार द्वारा निर्माण कार्य होने से आर्य समाज की गतिविधियों को और बल प्रदान होगा तथा महर्षि दयानंद सरस्वती के विचारों से आम जनमानस को लाभ प्राप्त होगा। विभाग द्वारा आर्य समाज हिम्मतपुर काकामयी का सौंदर्यीकरण कराये जाने पर आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा एवं पदाधिकारियों आदि ने हर्ष व्यक्त किया है।

आर्य समाज मंदिर, जी.टी. रोड, पं. दीनदयाल उपाध्याय नगर का 105वाँ वार्षिक वैदिक धर्म महोत्सव

आर्य समाज मंदिर, जी.टी. रोड, पं. दीनदयाल उपाध्याय नगर का १०५वाँ वार्षिक वैदिक धर्म महोत्सव दिनांक २५ दिसम्बर, से २८ दिसम्बर, २०२३ तक हर्षोल्लास पूर्वक धूमधाम से मनाया जायेगा।

समारोह में पं. शिव कुमार शास्त्री, सहारनपुर, डॉ. शम्भू नाथ शास्त्री, वाराणसी, प्रो. श्रद्धानन्द, वाराणसी, श्री राम सेवक, हमीरपुर, श्री सोमेन्द्र आर्य, पं. दीनदयाल उपाध्याय नगर, सुश्री दिव्य किरण, श्रीमती अनुराधा कृष्ण रस्तोगी आदि पधार रहे हैं।

कार्यक्रम में प्रातः ८:०० बजे से पूर्वाहन ११:०० बजे तक वेद शतक यज्ञ, भजन व प्रवचन, मध्यान्ह १२:०० बजे से सायं ५:०० बजे तक भजन, प्रवचन व विविध सम्मेलन होंगे। दि. २५ दिसम्बर,२०२३ को दोपहर २:०० बजे ध्वजारोहण व शोभा यात्रा निकाली जायेगी।

सभी धर्म प्रेमी बन्धु-बान्धवों से निवेदन है कि समारोह में पधारकर, वैदिक विद्वानों के वचनामृत का पालन कर जीवन सफल करें व कार्यक्रम को सफल बनावें।

सम्पर्क सूत्र-९३३६०५९६१०, ९४५४५८५२७७

महर्षि दयानन्द सरस्वती की तपोस्थली का शीघ्र विकास

बुलन्द शहर जिले की स्याना और अनूप शहर तहसील के गंगा तटीय ऐतिहासिक एवं पौराणिक महा भारतकालीन धार्मिक स्थलों की श्रृखला में उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग द्वारा उनका विकास शुरू हो गया है। इसी क्रम में महर्षि दयानन्द सरस्वती तपोस्थली को उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग द्वारा एस्टीमेट बनाने की प्रक्रिया तेज हो गयी है।

तपोस्थली का विकास एक करोड़ रूपये से किया जायेगा। बुलन्द शहर जिले कि स्याना और अनूप शहर तहसील में गंगा किनारे पौराणिक एवं ऐतिहासिक महाभारत कालीन धार्मिक स्थलों को पर्यटन का दर्जा दिलाने के साथ ही पर्यटन विकास का कारिडोर बनाने का अभियान चल रहा है।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश एवं स्याना के विधायक के प्रस्ताव पर ग्राम चासी स्थित महर्षि दयानन्द सरस्वती के तपोस्थली को पर्यटन विभाग द्वारा स्टीमेट तैयार करने हेतु आदेश जारी कर दिये गये हैं। जिसे स्वीकृति मिलने के बाद पर्यटन विभाग द्वारा शीघ्र कार्य शुरू कर दिया जायेगा।

सार्वदेशिक आर्य पुरोहित सभा का प्रथम साधारण अधिवेशन सफलता पूर्वक सम्पन्न

दिनांक ११.१२.२०२३ को ११ से १ बजे तक सभी की गरिमामय उपस्थिति एवं पूज्य स्वामी प्रणवानंद जी सरस्वती की अध्यक्षता में आर्य पुरोहितों की सर्वोच्च संस्था सार्वदेशिक आर्य पुरोहित सभा के अधिकारियों का चयन सर्व सम्मति से शांति पूर्ण वातावरण में श्रीमद्दयानंद वेदार्ष महाविद्यालय गुरुकुल गौतम नगर दिल्ली में संपन्न हुआ ।

जिसमें आदरणीय आचार्य प्रेमपाल शास्त्री जी दिल्ली को प्रधान, आचार्य नरेन्द्र शास्त्री मुंबई को महामंत्री और आचार्य अभय देव जी दिल्ली को कोषाध्यक्ष चुना गया।

अनेक प्रांतों से पधारे आर्य पुरोहितों में से अलग-अलग प्रांत से एक व्यक्ति को संयोजक नियुक्त किया गया और प्रांतीय स्तर की कार्यकारिणी की जिम्मेदारी सौंपी गई ।

तत्पश्चात ३ से ५ बजे तक आर्य पुरोहित सम्मेलन अध्यक्ष पूज्य स्वामी प्रणवानंद जी सरस्वती और मुख्य अतिथि दानवीर ठाकुर श्री विक्रम सिंह जी की उपस्थिति में पूर्ण हुआ ।

सभी ने अपने-अपने विचार दिए और सबके विचारों का सार यह था कि यह सभा संपूर्ण विश्व का मार्गदर्शन कर उसकी दिशा और दशा बदलने का कार्य करेगी ।

समाज के लिए सुयोग्य आर्य पुरोहित तैयार करेगी ।

आर्य समाज व आर्य पुरोहितों में सामंजस्य बिठाकर सौहार्दपूर्ण वातावरण बनायेगी

पूज्य स्वामी जी और ठाकुर साहब को सभा का संरक्षक नियुक्त किया गया ।

अचार्य हरि शंकर जी अग्निहोत्री आगरा ने कुशल संचालन किया।

आर्य समाज के महाधन डॉ. राम प्रकाश का निधन

आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान डॉ. राम प्रकाश जी का देहावसान दिनांक १३ दिसम्बर, २०२३ को प्रातः हो गया।

आर्य समाज की चौथी पीढ़ी के स्तम्भ डॉ. राम प्रकाश-लेखक, वक्ता, विद्वान शिक्षा शास्त्री, वैज्ञानिक, राजनीतिज्ञ आदि सभी क्षेत्रों में किसी परिचय के मोहताज नहीं है। उनकी लिखी पुस्तकें, सत्यार्थ प्रकाश विमर्श, यज्ञ विमर्श, वेद विमर्श, गुरु विरजानन्द दण्डी जीवन एवं दर्शन, पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी आदि सदैव आर्य समाज का मार्ग दर्शन करती रहेगी। पंजाब विश्वविद्यालय में दयानन्द पीठ की स्थापना का श्रेय डॉ. राम प्रकाश जी को है। लेखनी, वाणी, व्यवहार आदि सर्वांगीण रूप से आप वैदिक धर्म व महर्षि के पगचिन्हों पर चलने वाले एक अभूतपूर्व योद्धा थे।

स्व. डॉ. राम प्रकाश आर्य समाज में राजनीतिक बातों के उपयोग के बजाय आर्य समाज के सिद्धान्तों का राजनीति में प्रयोग करने के प्रबल पक्षधर थे। उनकी रिक्तता सदैव खलेगी।

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा एवं अन्य समस्त पदाधिकारीगण स्व. डा. राम प्रकाश जी के निधन पर अपनी शोक संवेदनायें व्यक्त करते हुए विनम्र श्रद्धांजलियाँ अर्पित करते हैं एवं परिजनों को यह दारुण दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करने की ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर./फैक्स: ०५२२-२२८६३२८
प्रधान-०६४१२६७८५७१, मंत्री-०६४१५३६५५७६, सम्पादक-६४५१८८१६७७
ई.मेल-apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,
....

ओओ चलें टंकारा - - आओ चलें टंकारा - आओ चलें टंकारा

सम्पूर्ण विश्व में गूँजेगा दयानन्द का जयकारा

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की २००वीं जयन्ती के दो वर्षीय आयोजनों की श्रृंखला में

200वाँ जन्मोत्सव-ज्ञान ज्यपोति पर्व

स्मरणोत्सव महासम्मेलन

10, 11, 12 फरवरी, 2024 (शनि, रवि, सोम)

महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती 1824-2024

महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्मभूमि, टंकारा, जिला-राजकोट (गुजरात)

हम सबके जीवन का ऐतिहासिक अवसर-आइये, इस महान अवसर के साक्षी बनें।

आर्यजनों, महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का 200वां जन्मोत्सव एक ऐतिहासिक अवसर है। किसी महापुरुष की जन्म शताब्दी अथवा द्विशताब्दी में सम्मिलित होने का अवसर किसी को भी जीवन में दोबारा प्राप्त होना सम्भव नहीं है। अत: इस अवसर पर आयोजित इस ज्ञान ज्योति पर्व-स्मरणोत्सव महासम्मेलन को भव्य एवं ऐतिहासिक बनाने के लिए समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओं, प्रमुख आर्य संगठनों, आर्य समाजों, शिक्षण संस्थानों, गुरुकुलों, विद्यालयों, डी.ए.वी. संस्थाओं तथा व्यापारिक एवं औद्योगिक संस्थाओं से अनुरोध है कि-

- आयोजन की उपरोक्त तिथियों 10, 11, 12 फरवरी में अपना कोई भी बड़ा आयोजन न रखें।
- समस्त साथियों, अधिकारियों सदस्यों एवं कार्यकर्ताओं सहित सपरिवार पहुंचने की तैयारी अभी से आरम्भ कर लें।
- महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती के ऐतिहासिक स्मरणोत्सव समारोह को सफल बनाने में अहम् भूमिका निभाएं।
- अपना रेलवे आरक्षण तुरन्त करवा लें, चाहें कितनी भी वेटिंग हो। वेटिंग टिकट को 9311413920 पर भेजें, ग्रुप में कन्फर्म कराने का प्रयास किया जायेगा।

हवाई मार्ग – टंकारा के निकटतम हवाई अड्डा राजकोट है। राजकोट हवाई अड्डे से टंकारा की दूरी 40 किलोमीटर है। दूसरा निकटतम हवाई अड्डा अहमदाबाद है जहां से टंकारा लगभग 250 किलोमीटर है। देश के लगभग सभी स्थानों। हवाई अड्डों से इन दोनों जगह की कनेक्टिविटी है तथा इन दोनों ही स्थानों से टंकारा पहुंचने का राजमार्ग बहुत अच्छा है। राजकोट का किराया काफी अधिक होगा। अत: अहमदावाद की टिकट लेकर टैक्सी अथवा डीलक्स बस से पहुंचना भी एक सरल माध्यम हो सकता है।

रेल मार्ग – टंकारा पहुंचने के लिए सबसे निकटवर्ती रेलवे स्टेशन राजकोट ही है। यह स्टेशन टंकारा से 45 कि.मी. की दूरी पर है। यहां से टंकारा के लिए लगातार टैक्सी और सरकारी एवं प्राइवेट बसों की सेवा संचालित हैं। कार्यक्रम के दिनों में हमारा प्रयास होगा कि राजकोट रेलवे स्टेशन से टंकारा आयोजन स्थल तक सरकारी बसों की विशेष व्यवस्था हो जाए, जिससे और भी आसानी रहे। अत: तुरन्त रेलवे टिकट ले लें, चाहे कितनी ही वेटिंग में मिले। वेटिंग टिकट को 9311413920 पर भेजें, कन्फर्म कराने का प्रयास किया जाएगा।

सड़क मार्ग – टंकारा से 500-600 किमी. की दूरी (गुजरात के निकटवर्ती-राजस्थान, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र) में रहने वाले महानुभाव अपनी-अपनी आर्य समाज/संस्था की ओर से बसों की व्यवस्था करके भी सामूहिक यात्रा का आयोजन कर सकते हैं।

भोजन व्यवस्था – टंकारा में आयोजन स्थल पर 9 फरवरी से 12 फरवरी की रात्रि तक भोजन की पर्याप्त व नि:शुल्क व्यवस्था रहेगी। जो महानुभाव उसके अतिरिक्त अन्य व्यवस्था लेना चाहे उनके लिए सशुल्क स्टाल भी उपलब्ध होंगे, जिन पर व्यवस्थानुसार भोजन/नाश्ता/फास्टफूड/मिष्टान/आदि का आनन्द भी लिया जा सकता है।

आवास व्यवस्था - टंकारा पहुंचने वाले समस्त आर्यजनों, श्रद्धालुओं के लिए आयोजन स्थल के साथ-साथ स्थानीय विद्यालयों, धर्मशालाओं, समाजवाड़ियों (पंचायती विवाह केन्द्रों) जो बहुत साफ-सुथरे और बेहतर व्यवस्था वाले हैं, में प्रत्येक व्यक्ति के लिए बेडिंग की पूर्णतया नि:शुल्क व्यवस्था की जाएगी।

होटल/सशुल्क आवास व्यवस्था – टंकारा में स्थानीय एवं कुछ दूरी पर मोरबी और राजकोट में अच्छी की व्यवस्था है। जहां उपलब्ध सुविधाओं के अनुसार दो व्यक्तियों हेतु 1500/- रुपये से 5000/- रुपये राशि पर कमरे बुक कराए जा सकते हैं। होटल/सशुल्क आवास व्यवस्था प्राप्त करने हेतु श्री अरुण प्रकाश वर्मा (9810086759) एवं सुरेश चन्द्र गुप्ता (9212082892) से सम्पर्क करें। यदि आप होटल/ सशुल्क व्यवस्था में रहना चाहते हैं तो शीघ्र (अभी आधी राशि) भेजकर होटल के कमरे बुक करवा लें, शेष राशि यात्रा से पूर्व/टंकारा पहुंचते ही अवश्य जमा करा देवें।

गणवेश – सभी आर्यजन सफेद कुर्ता, पजामा-धोती और संतरी पगड़ी या टोपी पहनकर इस महत्वपूर्ण उत्सव के साक्षी बनें। महिलाए क्रीम या पीली भारतीय परंपरा की साड़ी/वस्त्र धारण करके समारोह की गरिमा शोभा बढ़ाएं। सम्पूर्ण यात्रा एवं समारोह में टोपी/पगड़ी पीत-वस्त्र अवश्य ही धारण करके रखें। ओम का बैज या 200वीं जयन्ती के लोगों का बैज अवश्य लगा कर रखें।

मौसम – गुजरात में टंकारा क्षेत्र में इन दिनों बहुत सुहावना रहेगा केवल रात्रि में हल्का गर्म स्वेटर आदि की आवश्यकता हो सकती है। अन्यथा दिन में पंखे आदि चलते हैं। तापमान 30 किमी और 25 डिग्री के नीचे रहेगा।

भ्रमण – टकारा यात्रा के दौरान जो महानुभाव सम्मिलित होते हैं, वे भ्रमण आदि के लिए भी जाना चाहेगे तो आसपास दर्शनीय स्थान द्वारका, गिर के वन, स्टैचू आफ यूनिटी, चम्पानेर का किला, साबरमती आश्रम, रानी की वाव, पिरोटन इजलैंड कच्छ का रण जरवानी वाटरफाल, सरदार सरोवर डैम, खम्भेलिया केब्ज, रामपारा वाइल्डलाइफ सेंचुअरी है। वहां की भ्रमण व्यवस्था किसी ट्रैवेल एजेंट से करवाई जा सकती है। आप अपनी यात्रा की ट्रेन आदि की बुकिंग करवाते समय इसका भी विशेष ध्यान रख सकते है।

एक अनुरोध – जिस महान आत्मा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती पर हम जा रहे हैं, उन्होंने न जाने कितने कष्ट उठाएं, हमें हमारा आज देने के लिए। अत: यात्रा में कुछ कष्ट सम्भव है, हमारी ओर से पूर्ण व्यवस्थाएं की गई हैं, फिर भी सम्भव है कि कुछ परेशानी या कष्ट हो। स्वयं को इस कार्यक्रम का आयोजक समझकर अपने सहयोगियों के साथ मिलकर व्यवस्थाए बनाएं ऐसा हमारा निवेदन है।

सुरेश चन्द्र आर्य
प्रधान-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

पद्मश्री पूनम सूरी, प्रधान
दयानन्द स्मारक ट्रस्ट, टंकारा एवं डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी

सुरेन्द्र कुमार आर्य
अध्यक्ष-ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन समिति

निवेदक-आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, लखनऊ

देवेन्द्रपाल वर्मा
प्रधान

पंकज जायसवाल
मंत्री

अरविन्द कुमार
कोषाध्यक्ष

श्रीमती गायत्री दीक्षित, हरवीर सिंह सुमन, चौधरी रणवीर सिंह, मनमोहन तिवारी, सिद्धार्थ कपूर, सुनील कुमार, विजेन्द्र सिंह, ज्ञानेन्द्र सिंह मलिक, श्रीमती मीरा वर्मा, राम स्नेही सिंह, अजय श्रीवास्तव, आचार्य दीपक, सुनील कुमार सिंह, डा. अशोक कुमार आर्य, सत्यवीर चौधरी, डा. अमितेश अमित, राम जी आर्य, श्रीमती मिथलेश गौड़, राम कृष्ण पट्ठू, श्रवण महेश्वरी

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक–पंकज जायसवाल भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस,
5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शुभम् आफसेट प्रिंटर्स, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है–सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।